विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

फाल्गुन २०७४ फरवरी २०१८
ISSN-2321-3981

विज्ञान को भारत की देन...

₹ २०

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

Most trusted & renowned institute among IAS aspirants

पिछले डेढ़ दशक से लगातार हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

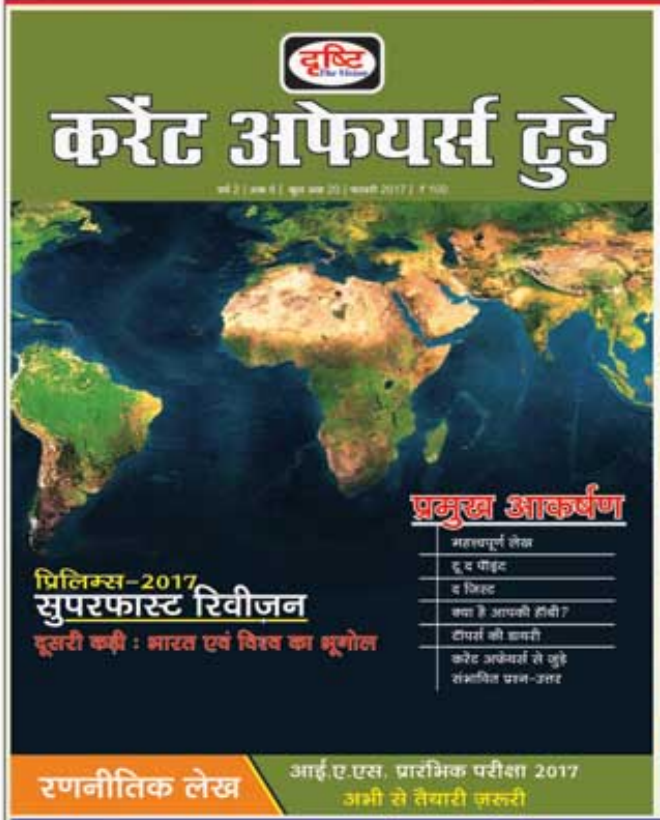

आपके नज़दीकी पुस्तक विक्रेता के पास उपलब्ध

सब जानते हैं कि सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी सिर्फ किताबों और नोट्स से नहीं हो सकती। यह भी ज़रूरी है कि आप दिन-प्रतिदिन की घटनाओं से जुड़ने के लिए इंटरनेट पर उपलब्ध अच्छे लेखों को पढ़ते रहें और अच्छी डिबेट्स को सुनते रहें।

आपकी इन सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए हम आपको आमंत्रित करते हैं अपनी लोकप्रिय वेबसाइट पर

www.drishtiias.com

वितरण एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें- (+91) 8130392355

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 | Contact : 87501 87501, 011-47532596

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

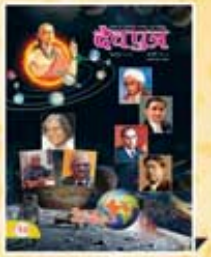

फाल्गुन २०७४ ▪ वर्ष ३८
फरवरी २०१८ ▪ अंक ८

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय
चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com

सीधे देवपुत्र के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या -53003591451
IFSC-SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

हम सब २८ फरवरी को अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाते हैं। भारत के प्रख्यात वैज्ञानिक सत्येन्द्रनाथ बोस की स्मृति को यह दिवस समर्पित होता है। भारत में विज्ञान की उन्नत परम्परा को हम देखना प्रारम्भ करते हैं तो हमें बहुत पीछे की ओर लौटना होता है। आर्यभट्ट, वराह मिहिर, नागार्जुन, चरक, सुश्रुत से लेकर यह परम्परा सर जगदीशचन्द्र बसु, होमी जहाँगीर भाभा, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, सी.एन. राव और अनिल काकोड़कर तक आती है।

हमारे इस दीर्घ गौरवशाली विज्ञान के इतिहास को हम स्मरण रखें तो मन की वो भ्रांतियाँ स्वतः दूर हो जाएंगी जो अंग्रेजों ने हमारे मन में भर दी हैं।

दुनिया जब पेड़ की छाल लपेटे जंगलों में घूम रही थी तब हमारे यहाँ विज्ञान के ऐसे शोध और आविष्कार हो रहे थे जिनका उल्लेख कर-करके पश्चिम जगत नोबल पुरस्कार जीतता रहा। अंग्रेजी दृष्टि से लिखे इतिहास में कभी यह स्वीकार नहीं किया गया कि भारत में सर्वप्रथम ऐसा स्टील तैयार किया गया था जिस पर पानी से भी जंग नहीं लगता था। उन्होंने कभी यह भी नहीं स्वीकारा कि जिसे वे 'पायथागोरस प्रमेय' कहते हैं वह हमारे वैज्ञानिक ऋषि बोधायन 'बोधायन सूत्र' के नाम से बहुत पहले दे चुके थे।

अब हमारा दायित्व है हम हमारा गौरवशाली वैज्ञानिक इतिहास पढ़ें और विश्व के समक्ष स्वाभिमान से खड़े हों। 'मेरा देश बदल रहा है' यह गीत गुनगुनाने के लिए थोड़ा तो हमें भी बदलना होगा ना?

आपका
बड़ा भैया

अनुक्रमणिका

कहानी

- नहले पर देहला - नीलम राकेश ०५
- भारत जैसा कोई नहीं - विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी १०
- रोमांचक अभियान - अरविन्द कुमार साहू २६
- शहर का राजा - हुँदराज बलवाणी ४५

लघुकथा

- गुलदाऊदी - मीरा जैन ३७
- ललकारा शेर को - मनोहर चमोली 'मनु' ३९

प्रसंग

- बर्नर कैसे बना... - सुधा तैलंग ०७
- कवि से वैज्ञानिक तक - राजेश शर्मा १४

कविता

- मेरे घोड़े - नरेन्द्र मस्ताना ०९
- मोबाईल के जादू से - रविन्द्र कुमार 'रवि' १२
- पाठ पढाओं... - राजेन्द्र निशेश १७
- लग गई ठंडी - डॉ. अनिल सवेरा २४
- तीन नन्हीं कविताएँ - अशोक जैन ४३

नाटक

- राज्यादेश -शंकरलाल माहेश्वरी ३४

चित्रकथा

- सूर्य का पड़ोसी बुध - संकेत गोस्वामी १८
- शाला में गोलू - देवांशु वत्स ३३
- ओह! मामाजी - देवांशु वत्स ४७

पर्यटन

- राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र आइवर यूशिएल २०

जानकरी

- अण्डो का रोचक संसार - कैलाश जैन २८
- यात्राकथा सितार की - दीपांशु जैन ४१

स्तंभ

- गाथा वीर शिवाजी की (१४) - २२
- कामरूप के संत... -डॉ. देवेनचंद्र दास 'सुदामा' ३१
- पुस्तक परिचय - ४४
- आपकी पाती - ४७

बाल प्रस्तुति

- शोर - अलीशा सक्सेना २५
- सौ ऊँट -विशाल लववंशी ३८

एवं अन्य ढेरों मनोरंजक सामग्री

नहले पर दहला

कहानी : नीलम राकेश

झांसी के छोटे से गाँव में दुर्गापुर में बसने वाले अधिकांश लोग धर्म परायण थे। धर्मभीरू समुदाय बुरी तरह घबराया हुआ था। गाँव में अजब अफरा–तफरी का आलम था। छुट्टियाँ बिताने दादी के गाँव आई विज्ञान की छात्रा वाणी, जब बाबा से इसका कारण पूछती, वे टाल जाते। अन्त में वाणी ने काकी से पूछा।

''काकी! यहाँ पर हर व्यक्ति चिन्तित परेशान और डरा हुआ सा क्यों है?''

''अरे बेटी! गाँव में लोग तरह–तरह के अन्धविश्वास पालते हैं। उसी से परेशान रहते हैं। कोई खास बात नहीं है।'' काकी ने भी उसे टरकाया।

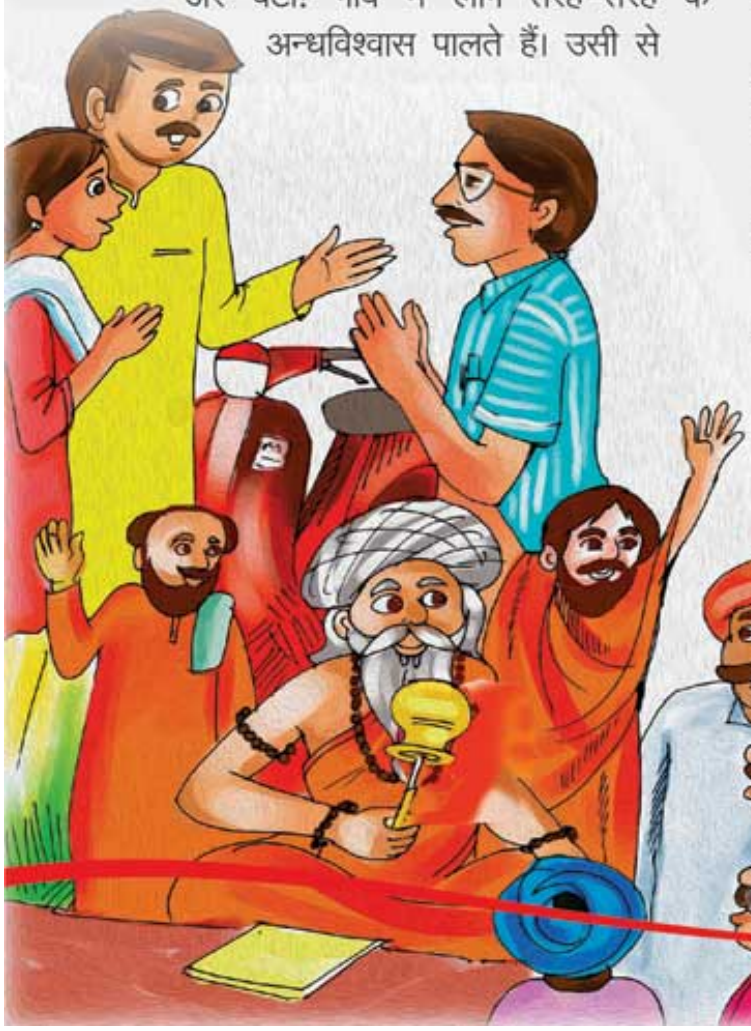

काकी के पास दाल गलती न देखकर वाणी, वहीं बैठी दादी के पीछे पड़ गयी।

''दादी! बताइए न क्या बात है?''

''कुछ बताइए न क्या बात है?''

''कुछ नहीं बेटी! दादी ने भी टाला''

''फिर भी दादी! कोई बात तो है, हर आदमी परेशान है। वाणी ने दादी को कुरेदा।''

''वाणी! तेरे बाबा गांव के सरपंच हैं, इसलिए लोग उनके पास सलाह के लिए आते हैं। वैसे कोई चिन्ता की बात नहीं है। सब ठीक हो जाएगा।'' दादी ने समझाया।

वाणी की समझ में नहीं आया कि दादी उसे तसल्ली दे रही थीं या स्वयं को। दुलराते हुए बोली, ''बताइए न दादी! जो ठीक हो जाएगी वह बात क्या है?''

पोती की जिद के आगे दादी ने हथियार डाल दिए। अपने कानों को हाथ लगाते हुए बोलीं,

''जाने हम लोगों से कौन सा अपराध हुआ कि गाँव के हनुमान ही रोने लगे। अरे बच्ची,हम लोगों ने खूब मनौती मानी, खूब चढ़ाया लेकिन हनुमान जी मानते ही नहीं। पंडित जी कहते हैं। गाँव पर जरूर कोई बड़ी मुसीबत आने वाली है। इसी से हनुमान जी दुखी है।''

''ये कैसे सम्भव है? हनुमान जी कैसे रो सकते है?'' आश्चर्य से वाणी बोली।

''अरे बच्ची! तू मंदिर जा कर देख, हनुमान जी के आंसू अभी तक नहीं सूखे हैं। जा, जाकर देख।''

मन्दिर की ओर जाते हुए वाणी ने पूछा ''काकी आपको लगता है इस बात में कोई सच्चाई है?''

''बात कुछ समझ में नहीं आती लेकिन मैंने देखा है, आँसू तो आये हैं।'' पढ़ी–लिखी काकी ने मन की दुविधा बताई।

मंदिर पहुँचते ही पंडित जी ने टोका।

''नहीं–नहीं, बाहर से ही जो चढ़ाना है चढ़ाओ। अन्दर नहीं जा सकती। देखती

नहीं हो देवता पहले ही नाराज है।''

''अरे, ये सरपंच के घर से है।'' किसी ने फुसफुसा कर बताया। तुरन्त पंडित जी का स्वर बदल गया।

''ओ, बिटिया! देवता पहले ही नाराज है। यहीं से दर्शन कर लो। क्या करूँ सुबह से बैठा–बैठा में भी परेशान हो जाता हूँ। आस–पास के गाँवों से लगातार लोग आ रहे है। देवता को प्रसन्न करने के लिए।''

दोनों ने हाथ जोड़े और वापस चल दीं। पंडित जी की नजर उसके खाली हाथों को देखती रही। तीन दिन से मंदिर में कोई भी खाली हाथ नहीं आया था। देवता के कोप का डर जो था। लौटते हुए वाणी बोली।

''काकी मुझे तो कुछ गड़बड़ लगता है।''

''चुप कर। अब मुँह मत खोलना। ये सब भक्त लोग हैं। यह शहर नहीं है। यहाँ उनके देवता के विरुद्ध बोलोगी तो पिट जाओगी। गाँव में धर्म के नाम पर लोग मरने–मारने पर उतर आते हैं।'' काकी ने उसे डराया।

''मैं देवता के विरुद्ध कहाँ बोल रही हूँ? गड़बड़ तो कोई इंसान ही कर रहा है। बेचारे भोले भाले गाँववासी बिना मतलब लुटते जा रहे है। वो स्वयं ही जा–जा कर अपना खून पसीने से जोड़ा धन और अनाज दान कर रहे हैं।''

''देखो वाणी! मुझे तो डर लगता है। अब चुप–चाप घर चलो और इस विषय पर कोई बात मत करना।''

घर पहुँचते ही दादी बोली, ''देख आई न बेटी?''

''हाँ दादी!'' कहती हुई वाणी अन्दर चली गयी।

''बेचारी डर गयी।'' दादी ने सहानुभूति जताई।

''कौन डर गया अम्मा?'' पूछते हुए वाणी के काका अन्दर आ गए। पूरी बात जानकर काका भी अन्दर चल दिए।

''वाणी क्या सोच रही हो?''

''काकाजी! आप तो शिक्षित हैं। इन बातों पर आपको विश्वास है?''

''नहीं''

''फिर कुछ करते क्यों नहीं? भोले–भाले लोग ऐसे ही लुटते रहेंगे क्या?''

''क्या करूँ? समझ में नही आता।''

''मेरे पास एक योजना है, लेकिन कुछ सामान और मददगार चाहिए।''

''एक परिचित शिक्षक हैं जो इन बातों से परेशान हैं। शायद मदद करें। मैं बात करता हूँ।'' काका बाहर चले गए।

लौटते ही काका बोले– ''वाणी! झटपट चलो, तुम्हें झाँसी घुमा कर लाऊँ।''

''इस समय?'' दादी वहाँ आ गयी थी।

''अरे अम्मा! झांसी जा रहा हूँ इसे जरा चाट खिला लाऊँगा।''

''ठीक है ले जा थोड़ा मन बदल जाएगा।'' प्यार से पोती को निहारती हुई दादी बोली।

गांव के बाहर काका ने स्कूटर रोका।

''वाणी, ये विद्यालय के अध्यापक पंडित भोलानाथ हैं।''

भोलानाथ उन्हें लेकर झांसी स्थित ''साइंस सेन्टर'' गए। पूरी समस्या बता कर मदद मांगी। अंधविश्वास के विरुद्ध समर्पित संस्था मदद के लिए तुरन्त तैयार हो गयी। वाणी प्रसन्नता से काका के साथ गांव लौट आई।

निर्धारित योजना के अनुसार अगले दिन प्रातः ही गाँव में कोई चेलों के साथ एक संन्यासी का आगमन हुआ। छोटे कद के वृद्ध संन्यासी के सिर पर सफेद जूड़ा बंधा था। लम्बी सफेद दाढ़ी पेट तक फहरा रही थी। गले में रूद्राक्ष की माला थी। अधरों पर बम–बम भोले की गूंज। शिष्यों से पता चला कि बाबा सीधे कैलाश से गाँव का कष्ट दूर करने आये हैं।

पंडित जी चकित थे किन्तु पूरा गाँव साधु महात्मा के चरणों में लोट गया था। बाबा ने मंदिर के चबूतरे पर आसन जमाया। माहौल कुछ ऐसा बना कि पंडित जी कुछ बोल नहीं सके।

''बाबा! देवता हम लोगों से क्यों नाराज है?'' हाथ जोड़ कर सरपंच ने पूछा।

''नहीं बच्चा! देवता आप लोगों से नाराज नहीं है।

देवता के कहने पर ही मैं यहाँ आया हूँ। लेकिन तुम्हारे प्रश्नों का जवाब स्वयं देवता देंगे। एक लोटा, मजबूत चाकू और थोड़ा चावल ले आओ।''

बाबा के अधरों से शब्द निकले की देर थी सामान बाबा के सामने था।

''इस लोटे में यह चावल भर दो। अब इस लौटे को चावल समेत, चाकू से उठा लो।''

''यह कैसे सम्भव है?''

''हाँ? नहीं हो सकता। लेकिन अगर देवता तुम लोगों से नाराज नहीं है तो ऐसा ही होगा। मैं देवता से प्रार्थना करता हूँ।''

चावल भरे लोटे में जोर जोर से चाकू मारते हुए बाबा बुदबुदाने लग। कुछ देर बाद चाकू के फल में फसा हुआ। चावल समेत लोटा उठ गया। लोग बाबा की जै–जैकार करने लगे।

''ठहरो? देवता तुम लोगों से नाराज नहीं है लेकिन दुखी है।'' बाबा की गम्भीर वाणी गूंजी।

''क्यों महाराज! क्यों?'' अनेक स्वर उभरे।

''देवता चाहते है तुम सब पढ़ो, लेकिन तुम लोग शिक्षा से दूर भागते हो। ऐसा करने से देवता का खून जलता है। देखा'' कहने के साथ बाबा ने पास रखा एक नारियल फोड़ दिया। चारों ओर खून फैल गया।

डरी सहमी नजरों से लोग उसे देखने लगे। कई स्वर एक साथ बोले।

''हमें माफ कर दो देवता! हम पढ़ेंगे।''

''हाँ–हाँ हम पढ़ेगें।''

''हाँ बाबा, मैं गाँव में पढ़ने की व्यवस्था कराऊंगा। हम सब पढ़ेंगे।'' सरपंच जी हाथ जोड़कर बोले।

एक नरियल को हाथ से उठाकर दिखाते हुए बाबा ने पुनः पूछा '' क्या हम लोगों में से कोई इसमें कुछ डाल

वर्नर कैसे बना नोबल विजेता

प्रसंग : सुधा तैलंग

वर्नर हाइजनबर्ग नामक एक युवक था। जो एक स्कूल में सन्तरी का काम करता था। उसकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। वर्नर को किताबें पढ़ने की अत्यंत रुचि थी। एक बार शाला में सफाई के दौरान उसे दार्शनिक प्लेटो की किताब 'थिमथस' मिल गई। उस किताब में प्राचीन यूनान के परमाणु संबंधी सिद्धांत लिखे थे। अब तो उस किताब को पढ़ते–पढ़ते उसकी भौतिकी में बेहद रुचि पैदा हो गई। लगातार पढ़ते हुए उसने पढ़ाई पूरी कर ली। मेहनत रंग लाई।

मात्र २३ वर्ष की उम्र में वो प्रोफेसर प्लांक के असिस्टेंट के रूप में काम करने लगे। इसके बाद लगातार वो आगे भी शोधकार्य, अध्ययन में लगे रहे। आगे चलकर उसी युवक बर्नर हाइजनबर्ग को भौतिक विज्ञान में असाधारण योगदान के लिए नोबेल पुरस्कार मिला। एक छोटी सी किताब भी किसी व्यक्ति को नोबेल पुरस्कार तक पहुँचा सकती है। ये उसने साबित कर दिखाया। सच किताबें मार्गदर्शक, प्रेरणा का काम करती है यदि मन में दृढ़ संकल्प व लगन हो तो सफलता को पाया जा सकता है। ऊँचाइयों को छुआ जा सकता है।

• भोपाल (म.प्र.)

सकता है?''

''नहीं'' समवेत स्वर उभरा।

''देवता तुम्हारे पढ़ाई के वादे से प्रसन्न है। उन्होंने इसे फूल से भर दिया है। देखो.....'' कहते हुए बाबा ने नारियल फोड़ दिया।

ढेर सारे फूल नारियल के पानी के साथ चारों और फैल गए। देवता और बाबा की जय के नारों से आकाश गूंज उठा। समय को पहचानते हुए पंडित जी भी जय–जयकार करने लगे।

कई दिनों से गाँव पर छाये आतंक और भय के बादल को हटा कर और दक्षिणा में शिक्षा ग्रहण करने के अनोखे वादे को ले कर संन्यासी गाँव से विदा हो गए।

एकांत में मिलतें ही काका ने पूछा– ''वाणी! ये जादू कैसे सम्भव हुआ?''

''सब विज्ञान का खेल है काकाजी''

''कैसे?''

''नारियल को ध्यान से देखिए तो तीन आँख बनी होती है। किसी नुकीली चीज से एक में छेद करके 'पोटशियम–पर–मैग्नेट' डाल देते हैं, वह पानी में घुल कर उसे खून जैसा लाल कर देता है। दूसरे नारियल में वैसे ही छेद से फूल की कलियाँ डाल देते है। जो रात भर पानी में रहकर खिल कर फूल बन जाती हैं।''

''और वो लोटे का उठना?''

''काका जी! चाकू से जब बार–बार चावल को मारा जाता है तो दानों के बीच जो हवा भरी रहती है वह निकलती जाती है और वे पास आते रहते हैं। जब पूरी हवा निकल जाती है तो चाकू चावल के दानों में फंस जाता है और पतले मुँह का लोटा चाकू से उठ जाता है।''

''और देवता के आंसू?''

''काकाजी! मूर्ति पर सिंदूर का लेप करते समय किसी ने नमक जैसी कोई नमी सोखने वाली चीज आँख के पास लगा दी नमी मिलते ही वह आँसू जैसे दिखने लगी। परिणाम स्वरूप चढ़ावे की बाढ़ आ गयी।''

''तो तुम लोगों ने सबको सच्चाई बताई क्यों नहीं?''

''लोगों के विश्वास के सहारे किसी ने उन्हें ठगने की चाल चली थी। हमने उनकी चाल का उपयोग लोगों को शिक्षा के लिए प्रेरित करने के लिए कर के उनके नहले पर दहला लगा दिया।''

''मान गए तुम्हारे विज्ञान के चमत्कार को।''

● लखनऊ (उ.प्र.)

दोनों चित्रों में आठ अंतर बताओ

- देवांशु वत्स

(उत्तर इसी अंक में)

मेरे घोड़े

कविता : नरेन्द्र मस्ताना

टिम्बकटू चल मेरे घोड़े।
टिम्बकटू चल मेरे घोड़े।।
तुझको ताजी घास मिलेगी, मैं गटकूंगा चाय पकौड़े।
टिम्बकटू चल मेरे घोड़े....
घण्टे भर का आना-जाना, खूब वहाँ पर मौज करेंगे।
नई-नई चीजे देखेंगे, जरा किसी से नहीं डरेंगे।।
खेल-कूद की खूब जगह है, सभी रास्ते लम्बे चौड़े।
टिम्बकटू चल मेरे घोड़े....
घर पर कोई काम नहीं है, पूरा दिन ही छुट्टी का है।
कल करने हैं काम बहुत से, काम वहाँ इक मुट्ठी का है।।
दौड़ लगा चेतक बनकर के, इधर-उधर क्यूँ गर्दन मोड़े।।
तेरे जैसे खूब मिलेंगे, अपनी कहना उनकी सुनना।
जो कुछ अच्छा लगे वहाँ का, उसको तू जीवन में गुणना।।
ध्यान सभी का मंजिल पर है, जिनको अब तक पीछे छोड़े।
टिम्बकटू चल मेरे घोड़े....
बाबा से यह खूब सुना है, ठण्ड वहाँ पर पड़ती भारी।
खाने की तो कमी नहीं है, पर जाना करके तैयारी।।
भरे जेब में सारे वैसे, जितने थे गुल्लक में जोड़े।
टिम्बकटू चल मेरे घोड़े....

• सहारनपुर (उ.प्र.)

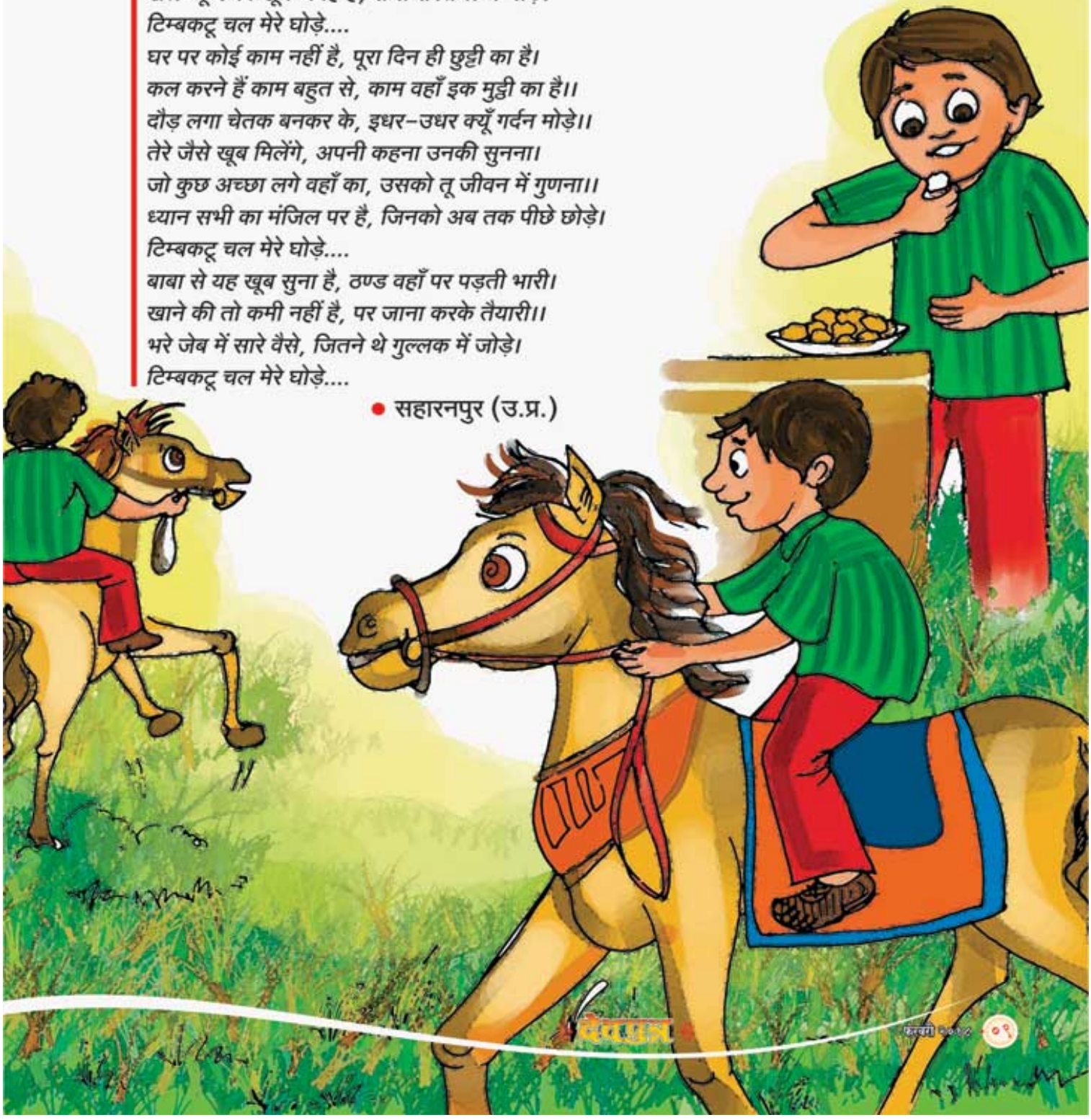

।। विज्ञान कहानी ।।

भारत जैसा कोई नहीं

कहानी : विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी

सरिता आज विद्यालय से लौटी तो बड़ी उदास थी। सरिता के विद्यालय में आज आविष्कार व आविष्कारक पर प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता हुई थी। सरिता ने प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। सरिता के मन में उठे विचारों ने, प्रथम आने की खुशी को ढाप दिया था।

सरिता जब घर पहुँची तो सरिता का चेहरा देख माँ ने अनुमान लगाया कि प्रतियोगिता में सफलता नहीं मिलने के कारण ही सरिता उदास है। इस कारण माँ ने प्रतियोगिता के विषय में कोई प्रश्न करना उचित नहीं समझा। तभी सरिता ने बस्ते से पुरस्कार निकाल कर मेज पर रख दिया। माँ ने पुरस्कार उठा कर देखा तो पता चला कि प्रतियोगिता में सरिता ने प्रथम स्थान प्राप्त किया था।

प्रथम स्थान प्राप्त करने के बाद भी सरिता को उदास देख माँ चिन्तित हो गई। उस दिन सरिता का व्यवहार अन्य दिनों से अलग था। जब भी किसी प्रतियोगिता में जीत कर आती तो घर में प्रवेश करने के पहले ही सरिता चिल्ला कर परिणाम की घोषणा करने लगती थी। सरिता माँ के बहाने आसपास के लोगों को भी अपनी जीत से अवगत करा देती थी। उस दिन सरिता ने वैसा नहीं किया तो माँ चिन्तित हो गई। माँ समझ नहीं पा रही थी कि सरिता क्यों उदास थी।

''सुरु बेटी! जीतने पर भी इस तरह मुँह क्यों उतार रखा है? क्या किसी से झगड़ा हो गया?'' माँ ने एक साथ कई प्रश्न सरिता से पूछ लिए। माँ सरिता को प्रेम से सुरु बेटा कह कर बुलाती थी।

''नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है।'' सरिता ने मुस्करा कर कहा। जल्दी से खाना लगा दो, बहुत जोर से भूख लगी है। मैं कपड़े बदल कर आती हूँ। माँ को उदास होते देख सरिता ने कहा था। जब सरिता भोजन कर चुकी तो माँ ने फिर उसकी उदासी का कारण पूछा।

''माँ! कारण तो है मगर

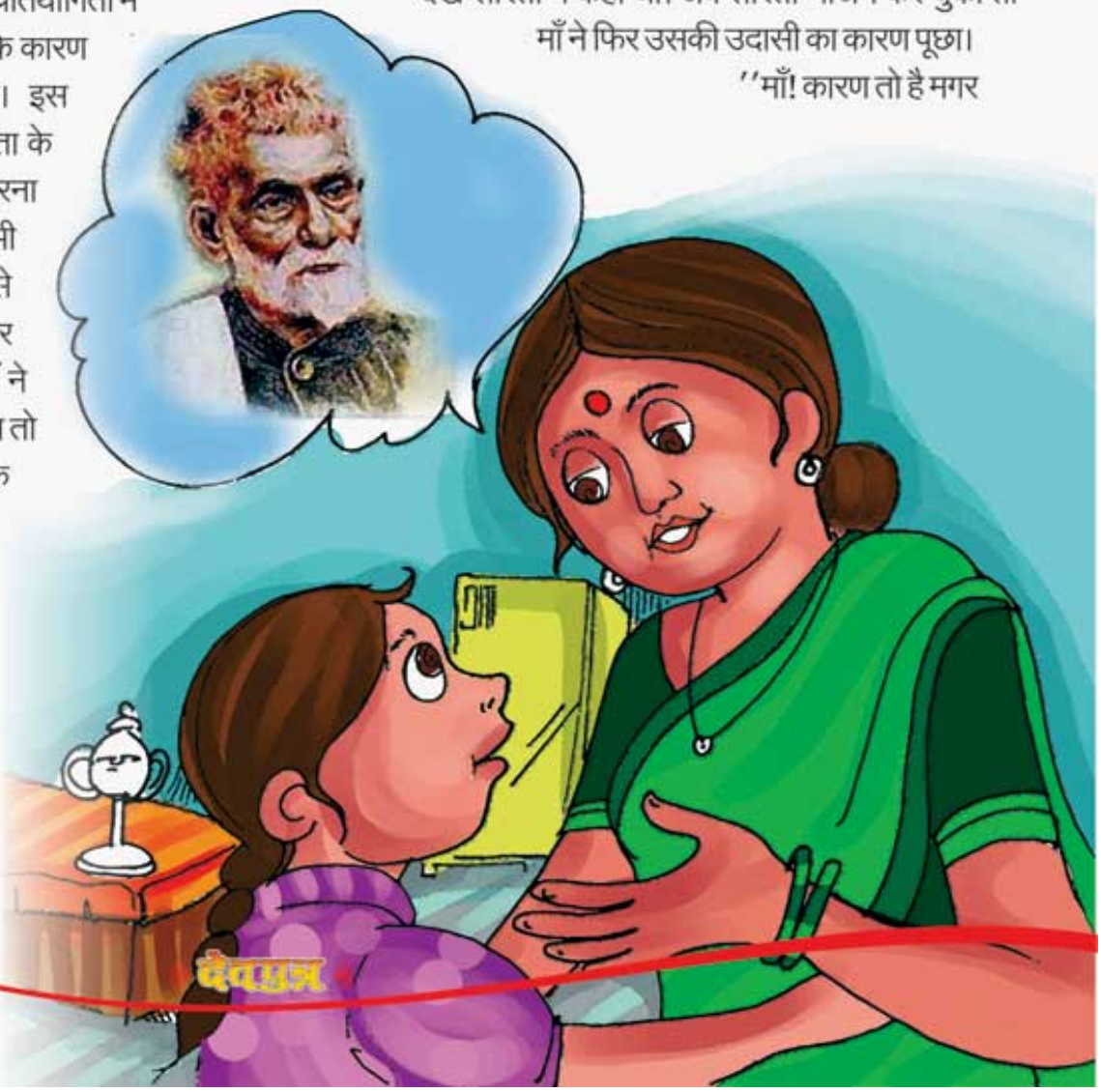

वैसा नहीं जैसा तुम समझती हो। ऐसा हुआ कि आज की प्रतियोगिता में जितने भी प्रश्न पूछे गए उनमें अधिकांश का संबंध विदेशों से था। बात इतनी ही नहीं थी पुरस्कार के बाद मुख्य अतिथि जी ने कहा कि अंग्रेजों ने भारत में विज्ञान की शिक्षा प्रारम्भ की थी। कुछ क्षेत्रों को छोड़ कर भारत विज्ञान में अधिक प्रगति नहीं कर पाया है। इस कारण आविष्कार व आविष्कारक की सूची में भारत के लोगों के नाम नहीं है। आज की युवा पीढ़ी को अच्छी पढ़ाई कर भारत का नाम रोशन करना चाहिए। सरिता ने बताया।

''इसमें परेशान होने की क्या बात है?'' माँ ने सहजता से कहा। ''परेशान होने की क्यों नहीं माँ? एक और तो हमें बताया जाता है कि भारत एक महान देश है। विश्व में एक मात्र भारत ही ऐसा देश है जिसकी संस्कृति प्रारम्भ से लेकर आज तक निरन्तर चली आ रही है। प्राचीनकाल में भारत की संस्कृति विश्व के अधिकांश भागों में फैल गई थी। यदि यह सच है तो सारे आविष्कार भारत के बाहर ही क्यों हुए?'' सरिता ने माँ से प्रश्न किया।

''तुम्हारा प्रश्न सही है। यह बात भी सही कि आज मानव की मदद करने वाले लगभग सभी यन्त्रों का आविष्कार भी भारत के बाहर ही हुआ। जो प्रश्न आज तुम्हारे सामने उपस्थित हुआ है वह नया नहीं है।'' माँ ने कहा।

''प्रश्न तो प्रश्न ही होता है। नया पुराना कह कर तुम मुझे बहला नहीं सकती। अब में बड़ी हो गई हूँ। चाकलेट लेकर चुप होने वाली नहीं हूँ।'' सरिता ने अपने प्रश्न पर अड़ते हुए कहा।

''मैं तुम्हें बहला नहीं रही। सच ही बात रही हूँ। महान वैज्ञानिक प्रफुल्लचन्द्र राय का नाम तो तुम सुन चुकी हो। प्रफुल्लचन्द्र जब तुम्हारे जैसे बच्चे थे उन्होंने अंग्रेज लेखक माण्डलर की पुस्तक जीवन चरित्र भण्डार पढ़ी। पुस्तक में दुनियां के १००० महान लोगों का वर्णन था। उनमें भारत के एक व्यक्ति राजा राममोहन राय का ही नाम था। इस पुस्तक को पढ़कर बालक प्रफुल्लचन्द्र के मन में यह प्रश्न उठा था कि जब भारत महान है तो भारत में महान लोग क्यों नहीं हुए?'' माँ ने बताया।

''फिर क्या हुआ?'' सरिता ने प्रश्न किया। अपनी तुलना महान वैज्ञानिक प्रफुल्लचन्द्र राय से होते देख सरिता की जिज्ञासा बढ़ गई थी। ''प्रफुल्लचन्द्र राय जब रसायन शास्त्र का अध्ययन करने इंग्लैण्ड गए तो उनके एक अंग्रेज शिक्षक ने गर्व से कहा था कि भारतीय रसायनशास्त्र के विषय में कुछ नहीं जानते। भारतीयों को बस उतना ही रसायनशास्त्र आता है जितना अंग्रेज उन्हें सिखाते हैं। शिक्षक की वह बात प्रफुल्लचन्द्र के गले नहीं उतरी क्योंकि प्रफुल्लचन्द्र ने बचपन में ही प्राचीन भारतीय ग्रंथों को पढ़ लिया था। प्रफुल्लचन्द्र राय भारत आए और अलग भारतीय ग्रंथों में रसायनशास्त्र के विषय में दी गई जानकारी को एकत्रित किया। इतनी जानकारी एकत्रित हुई कि दो भागों वाला हिन्दू केमिस्ट्री ग्रंथ तैयार हो गया। उस ग्रंथ ने विश्व को बताया कि जब तक अंग्रेजों ने कपड़े पहनना ही नहीं सिखा था तब, आज भी बनाने में कठिन माने जाने वाले रासायनिक पदार्थों का निर्माण भारत में किया जाने लगा था। इससे प्रफुल्लचन्द्र राय के मन में भारतीय होने के प्रति इतना गर्व जगा कि वे इंग्लैण्ड में भी भारतीय वेशभूषा में रहने लगे थे। उस सादगी भरी वेशभूषा से उन्हें कई बार अपमानजनक स्थिति का सामना करना पड़ा, मगर वे उन घटनाओं से विचलित नहीं हुए जैसे तुम हो रही हो।'' माँ ने बताया। ''मैं प्रफुल्लचन्द राय जैसी महान नहीं हूँ। मैं तो सीधीसाधी तुम्हारी सुरु बेटी हूँ।'' सरिता ने कहा और स्नेहवश माँ से लिपट गई।

इस आलिंगन से माँ भी भावुक हो गई। माँ ने सरिता को दोनों बाहों में कस लिया। कई मिनिट तक कोई कुछ नहीं बोला।

''ले उठ! आज तो भोजन का समय कुछ अधिक ही लम्बा हो गया है।'' माँ ने अपनी जकड़ से सरिता को मुक्त करते हुए कहा। सरिता भी सामान्य हो गई थी।

''तुमने सही कहा कि तुम महान नहीं हो। कोई भी जन्मजात महान नहीं होता। व्यक्ति के कर्म ही उसे महान बनाते हैं। प्रफुल्लचन्द्र राय भी तुम्हारी उम्र में ही महान नहीं बन गए थे। प्रफुल्लचन्द्र राय ने उम्रभर भारत की जो सेवा की उसी से उन्हें आज एक महान व्यक्ति के रूप में याद किया जाता है।'' माँ ने बात समाप्त करने की दृष्टि से कहा।

''माँ! प्रफुल्लचन्द्र राय की बात तो ठीक है। इससे आधुनिक आविष्कारों के भारत में नहीं होने की बात छुप नहीं जाती। सरिता ने फिर मूल प्रश्न को पकड़ लिया था।

''छुपाने की आवश्यकता भी नहीं है। जिन आविष्कारों की तुम बात कर रही हो वे सब प्रकृति का शोषण करने वाले सिद्ध हुए हैं। दिल्ली की हवा में जहर इन आविष्कारों ने ही घोला है। जिसे विकास कहा गया वह विनाश सिद्ध हुआ है। भारत ने प्राचीनकाल में ही जान लिया था कि पृथ्वी के संसाधन सीमित हैं। मशीनों की सहायता से इनका अधिक उपभोग किया गया तो दुनिया नष्ट हो जाएगी। इस विचार के बाद भौतिकविकास को छोड़ भारत आध्यात्म के विकास की ओर मुड़ गया। आज सिद्ध हो गया कि भारत का विकास मार्ग सही था। आज विश्व भारत के मार्ग पर चलना चाहता है।'' माँ ने गम्भीरता से कहा।

''माँ केवल आपके कहने से कैसे मान लिया जाए? विज्ञान प्रमाण चाहता है सरिता बोली।

''हाथ कंगन को आरसी क्या, पढ़े लिखे को फारसी क्या? प्रमाण ही प्रमाण है। ले आज के अखबार में छपा यह समाचार तो पढ़।'' माँ ने समीप रखा समाचार पत्र सरिता की ओर बढ़ाते हुए कहा।

जर्मनी के शहर बॉन में चल रहे २३वें जलवायु सम्मेलन का समाचार चित्र सहित प्रकाशित हुआ था। विश्व के १९७ देशों के २५ हजार लोग सम्मेलन में भाग ले रहे थे। सरिता समाचार पढ़ने लगी। उसे यह जानकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वहां मशीनीकरण का विरोध हो रहा था। लोगों को पीने का पानी देने के लिए भारत की तरह प्याऊएं लगाई गई थीं। प्याऊ पर कतार में खड़े लोग अपनी अपनी बोतल में पानी भर रहे थे। चाय पीने के मिट्टी के कुल्हड़ दिए गए थे। इसके पहले पेरिस में यही सम्मेलन हुआ तो ३० प्रतिशत लोगों ने शाकाहारी भोजन किया था। बॉन सम्मेलन में शाकाहारियों का प्रतिशत बढ़कर ६० हो गया था। सरिता को लगा कि माँ सही कर रही है।२१वीं शताब्दी का विश्व प्राचीन भारत में लौटना चाहता है और हम हैं कि....।

''सचमुच भारत जैसा कोई नहीं'' सरिता के मुंह में स्वतः ही निकल गया। सरिता के चेहरे से उदासी के भाव समाप्त हो ताजगी छा गई थी। वह उत्साह से भर गई थी। सरिता भी माँ की तरह भारत को एक बार सादगी भरा महान देश बनाने में जुट जाना चाहती थी।

● पाली (राज.)

मोबाइल के जादू से

कहानी : रावेन्द्र कुमार 'रवि'

चाबी के गुच्छे के पीछे,
लगे हुए कुछ भुट्टे?
गुड्डा-गुड़िया, खेल-खिलौने
कहाँ गए वे गुट्टे?

छुआ-छुअंबर, आँख-मिचोली,
इक्कल-दुक्कल गायब।
मोबाइल के जादू से अब,
बचपन होता गायब।

शिशु से सीधे बन जाता है,
अब किशोर हर बच्चा।
बालमनों के लिए रचेंगे,
अब क्या प्यारे चच्चा?

● ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

बताओ तो जानें

• राजेश गुजर

बच्चो, बताओ इस दीवार को पूर्ण करने के लिए कितनी ईंटें लगेगी?

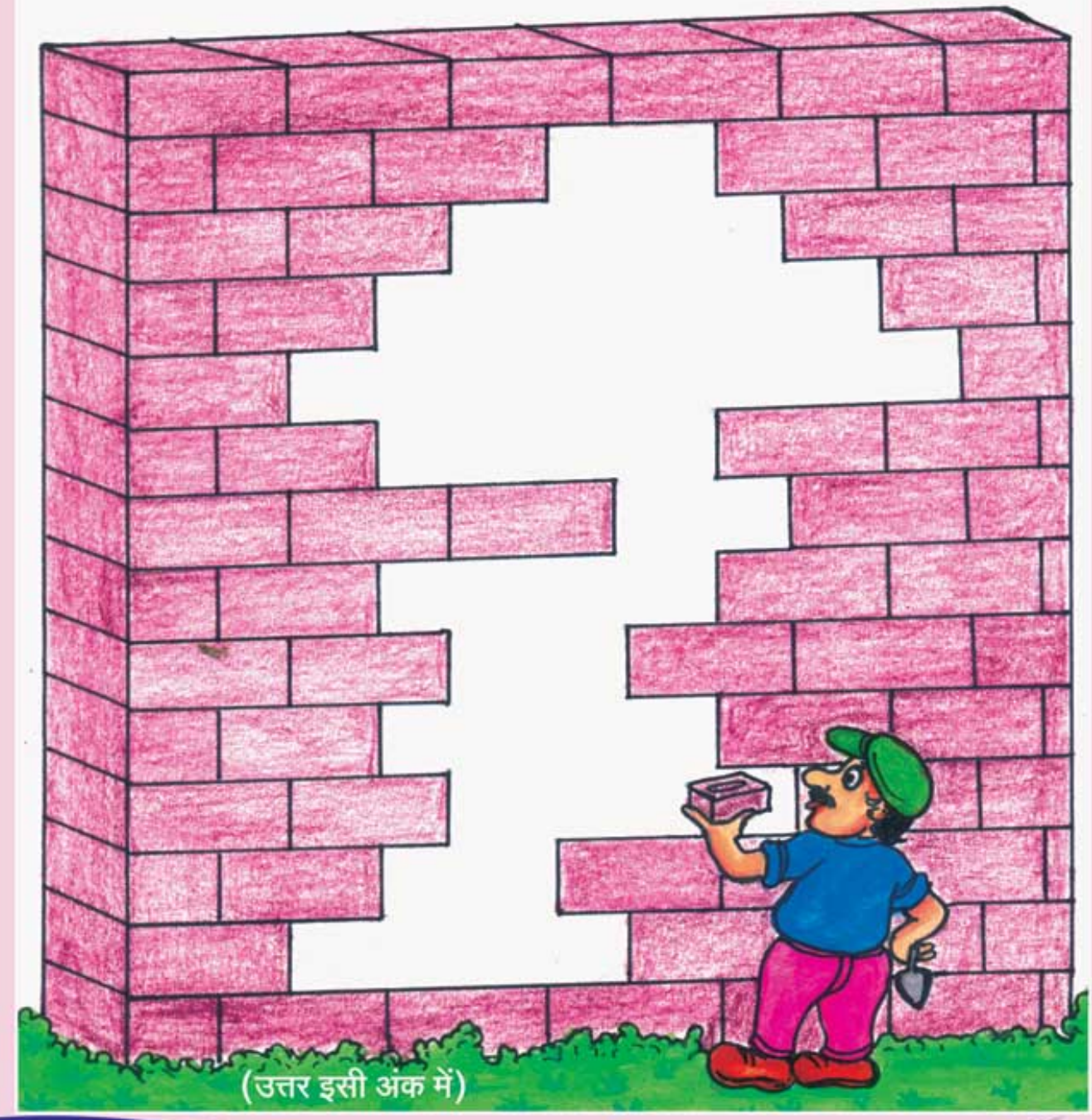

(उत्तर इसी अंक में)

कवि से वैज्ञानिक तक

डॉ. शांतिस्वरूप भटनागर

प्रसंग : मीनाक्षी कुलकर्णी

बालक शान्तिस्वरूप ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण कर कॉलेज में प्रवेश लिया। कॉलेज के प्रथम वर्ष में ही अपनी प्रतिभा एवं परिश्रम के बल पर कॉलेज में विशेष स्थान बनाया। रसायन शास्त्र के प्रोफेसर रूचिराम साहनी इस पितृविहीन होनहार बालकर का विशेष ध्यान रखते थे।

इन दिनों कलकत्ता विश्वविद्यालय के डॉ. सर जगदीशचन्द्र बसु देश–विदेश में अपनी नई–नई खोजों के लिए चर्चा एवं सम्मान का विषय बने हुए थे। उन्होंने जड़ पदार्थों में चेतना होने का सिद्धांत प्रयोगों द्वारा सिद्ध किया था। पंजाब विश्वविद्यालय ने भी डॉ. बसु को लाहोर में सम्मानित करने का निश्चय किया।

उनके स्वागत सत्कार, भाषण, प्रयोग प्रदर्शन और रहने की सारी व्यवस्था प्रोफेसर रुचिराम साहनी को सौंपी गई। शान्तिस्वरूप को यह बात पता चली तो वह भागत हुए प्रो. साहनी के पास गया और प्रश्न किया – ''सर! क्या यह सच है कि डॉ. बसु यहाँ आ रहे हैं?''

''एकदम सच'' प्रोफेसर साहनी ने उत्तर दिया। ''तब तो मजा आ जाएगा।'' शांति ने उछलते हुए कहाँ।'' और हाँ, तुम्हें बहुत काम करना पड़ेगा शान्ति।'' प्रोफेसर ने कहा। सारी व्यवस्था केवल देखनी ही नहीं बल्कि ठीक से सम्हालना भी पड़ेगी।'' प्रोफेसर साहनी उसे बहुत कुछ समझाते रहे और जब वह जाने लगा तो उसे रोकते हुए कहा–सुनो शान्ति। अरे, तुम तो कविता लिखते हो ना। तो इस मौके पर शायरी का जौहर क्यों नहीं दिखाते?''

''मैं समझा नहीं सर! शान्ति ने कहा ''अरे, एक आध कविता लिख डालो डॉ. बसु के स्वागत में। उस दिन पढ़ देना क्यों?'' प्रो. साहनी ने कहा। ''जरूर सर!'' और प्रसन्नता से शांति स्वरूप चला गया।

अब वह तनमन से उस दिन की तैयारी करने लगा जिस दिन डॉ. बसु का स्वागत होना था। वह शुभ दिन आ ही गया, डॉ. बसु लाहोर आ पहुंचे। दूसरे दिन विश्वविद्यालय भवन में उनका स्वागत होना था। सारा सभागार प्राध्यापकों, गणमान्य नागरिकों और विज्ञान के छात्रों से खचाखच भरा था। सर्वप्रथम प्रो. साहनी ने डॉ. बसु का परिचय दिया। विज्ञान के क्षेत्र में उनके उपलब्धियों की कहानी सुनाई। फिर घोषणा की अब हमारे विश्वविद्यालय एफ.एस.सी. प्रथम वर्ष का एक छात्र अपनी कविता से आदरणीय डॉ. बसु का स्वागत करेगा। छात्र का नाम है ''शान्तिस्वरूप भटनागर।''

शान्तिस्वरूप मुस्कुराते हुए मंच पर आए। पहले उसने सभी का अभिवादन किया। फिर स्वागत में लिखी गई नज्म (कविता) पढ़ने लगा–

''लौ नकाबे–अब्र में अब जलवा दिखलाने लगी,
माहराने बर्क से खुद बर्क शरमाने लगी।
जोशे–इस्तकबाल से किस शक्ल पर लाली नहीं,
रोशनी–ए–इस्जम है, गो आज दिवाली नहीं।

यह स्वागत कविता सुनकर सारा हॉल तालियों से गूँज उठा। स्वयं डॉ. बसु ने शान्ति स्वरूप की ओर देख, मुस्कुराकर उसका स्वागत स्वीकार किया।

दूसरे दिन डॉ. बसु का अपनी वैज्ञानिक खोजों पर प्रयोग प्रदर्शन होना था। इस प्रयोग प्रदर्शन में उन्हें दो एक सहायकों की आवश्यकता थी। प्रो. साहनी ने उच्च कक्षा के पांच विद्यार्थियों के साथ शान्तिस्वरूप को भी बुला लिया। छात्रों को समझाते हुए कहा।

कल डॉ. बसु अपने प्रयोगों का प्रदर्शन करने वाले हैं। उन्हें कुछ सहायकों की आवश्यकता हैं तुम लोग उनके पास जाओ। जो पूछे, बताओ। जैसा कहे करो।

डॉ. बसु ने एक–एक छात्र को बुलाया। जन्मजात

वैज्ञानिक एवं कलाकार डॉ. बसु को उनमें से उच्च कक्षा का एक भी विद्यार्थी नहीं जँचा, जो ठीक प्रकार से उनकी सहायता कर पाने के योग्य होता। अंत में शान्तिस्वरूप उनके सामने खड़ा हो गया। डॉ. बसु ने उसे कई प्रश्न पूछे। वह उत्तर देता रहा।

डॉ. बसु की दृष्टि ने कल के इस महान वैज्ञानिक को पहचानने में तनिक भी भूल नहीं की। उनकी चेतना एवं परख ने उन्हें बताया कि यहाँ का एक मात्र यहीं छात्र उनके प्रयोग प्रदर्शन में सही अर्थों में सहायक का काम कर सकता हैं। स्नेह एवं विश्वास के साथ उसे देखते हुए उन्होंने कहा– ''कल प्रयोग प्रदर्शन के समय अकेले तुम मेरे साथ रहोगे।''

''यह मेरे लिए गौरव की बात होगी सर!'' शान्ति ने मस्तक झुकाते हुए प्रसन्नता पूर्वक कहा– ''मैं आपके विश्वास को कतई ठेस नहीं पहुंचने दूंगा सर!''

अगले दिन विश्वविद्यालय के खचाखच भरे हॉल में डॉ. बसु का प्रयोग प्रदर्शन हुआ। शान्ति संकेतानुसार सहायता पहुँचाता रहा। लोग प्रत्येक प्रदर्शन पर अचंभित हो तालियाँ बजाकर अपनी प्रसन्नता प्रकट करते रहे। हर सफल प्रयोग के बाद डॉ. बसु शांतिस्वरूप की पीठ थपथपाते देते।

उस दिन का कार्यक्रम समाप्त हुआ। प्रो. साहनी ने प्रयोग प्रदर्शन के लिए डॉ. बसु का धन्यवाद किया।

इन सबका उत्तर देते हुए औपचारिकता से परे हटकर डॉ. बसु ने बड़े ही भावपूर्ण स्वर में कहा– ''यहां आने का लाभ मुझे भी कम नहीं हुआ। यहाँ के महान वैज्ञानिक प्रोफेसरों के प्रदर्शन का लाभ तो हुआ ही, एक भावी वैज्ञानिक से मिलने का भी अवसर पा सका।'' उनकी बात सुनकर सभी श्रोता चौकन्ने हो उठे। डॉ. बसु ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा– '' पंजाब विश्वविद्यालय इस बात पर गर्व कर सकता है कि वह जल्दी ही अपने देश और सारे विज्ञान जगत को एक महान वैज्ञानिक देने जा रहा है। एक क्षण रूककर उन्होंने कहा– आप लोग भविष्य के उस महान वैज्ञानिक का नाम जानना चाहोगे? उसका नाम है– आज के मेरे प्रयोग प्रदर्शन का सहायक एफ.एस.सी. प्रथम वर्ष का छात्र, **शांतिस्वरूप भटनागर।**

सारे हॉल में बैठे लोगों ने एकाएक चौककर कहा और दूसरे ही क्षण सारा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से

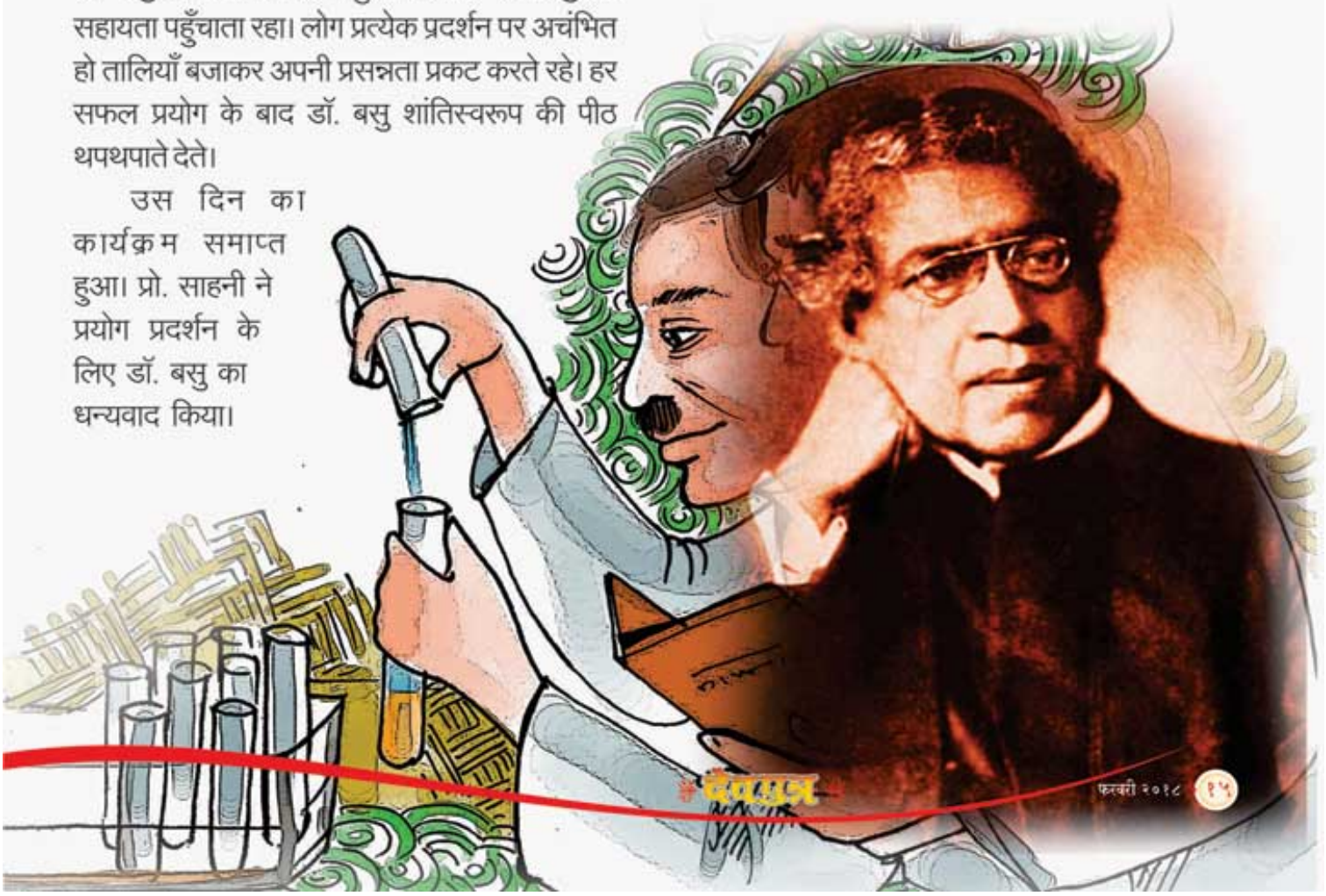

गूँज उठा। युवक शांतिस्वरूप डॉ. बसु के चरणों में झुक गया। इस दिन और घटना का शान्तिस्वरूप के मन मस्तिष्क पर अत्याधिक गहरा प्रभाव पड़ा। उसके भावी वैज्ञानिक जीवन के लिए प्रेरणा, प्रोत्साहन का एक अक्षय स्त्रोत बन गया। डॉ भटनागर अणुओं के चुम्बकीय गुण और रसायन संबंधी चुम्बक विज्ञान पर विशेष महत्वपूर्ण कार्य करते रहें।

उन्होंने अपनी खोजों पर नितांत मौलिक शोध पत्र लिखे जिसका प्रकाशन देश–विदेश की पत्र–पत्रिकाओं में हुआ। विशुद्ध वैज्ञानिक खोजों तक अपने आप को सीमित न रख, अब वे रसायन उद्योग के विकास के लिए नई विधियाँ खोजने में लग गए। इस प्रकार की खोजों में उनकी पेट्रोलियम उद्योग संबंधी खोजें महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। उद्योग संबंधी खोज का लाभ अनेक देश–विदेश के उद्योगपतियों ने लिया। डॉ. भटनागर ने तेलों पर कई प्रयोग किये। नये तेलों का अविष्कार भी किया। इस कारण पूरा विज्ञान जगत इन्हें 'तेल सम्राट' कह कर संबोधित करने लगा। स्वतंत्र भारत के नवनिर्माण में डॉ. शान्तिस्वरूप भटनागर का अपना एक विशेष स्थान हैं।

● इन्दौर (म.प्र.)

संस्कृति प्रश्नमाला

१ *पक्षिराज जटायु का अंतिम संस्कार किसने किया?*

२ *वीर अभिमन्यु के चक्रव्यूह में प्रवेश द्वारा पर किसने रोक लिया?*

३ *महाराज मनु की एक विशाल प्रतिमा किस देश की संसद के सामने लगी है?*

४ *रामायण काल का पम्पा सरोवर अपने देश में किस प्रांत में स्थित है?*

५ *भागवत महापुराण में विश्व के २४ अवतारों का उल्लेख है। इनमें आठवां अवतार कौन हैं?*

६ *छत्रपति शिवाजी महाराज के वे सेनापति कौन थे जिन्होंने गजापुर की घाटी में सिद्धी मसूद की फौज को रोके रखा?*

७ *त्रिकोणमिति के सिद्धांत भास्कराचार्य के किस प्राचीन ग्रंथ में आये हैं?*

८ *राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना करने वाले डॉ. हेडगेवार को क्रांतिकारी संगठन अनुशीलन समिति में क्या नाम दिया गया था?*

९ *आस्ट्रेलिया का वह खिलाड़ी कौन है जो मार्च माह के प्रारम्भ में अपने मित्र की अस्थियाँ गंगा में प्रवाहित करने आया था?*

१० *औरंगजेब को सफल चुनौती देने वाले ब्रज प्रदेश के जाट महाराजा कौन थे?*

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

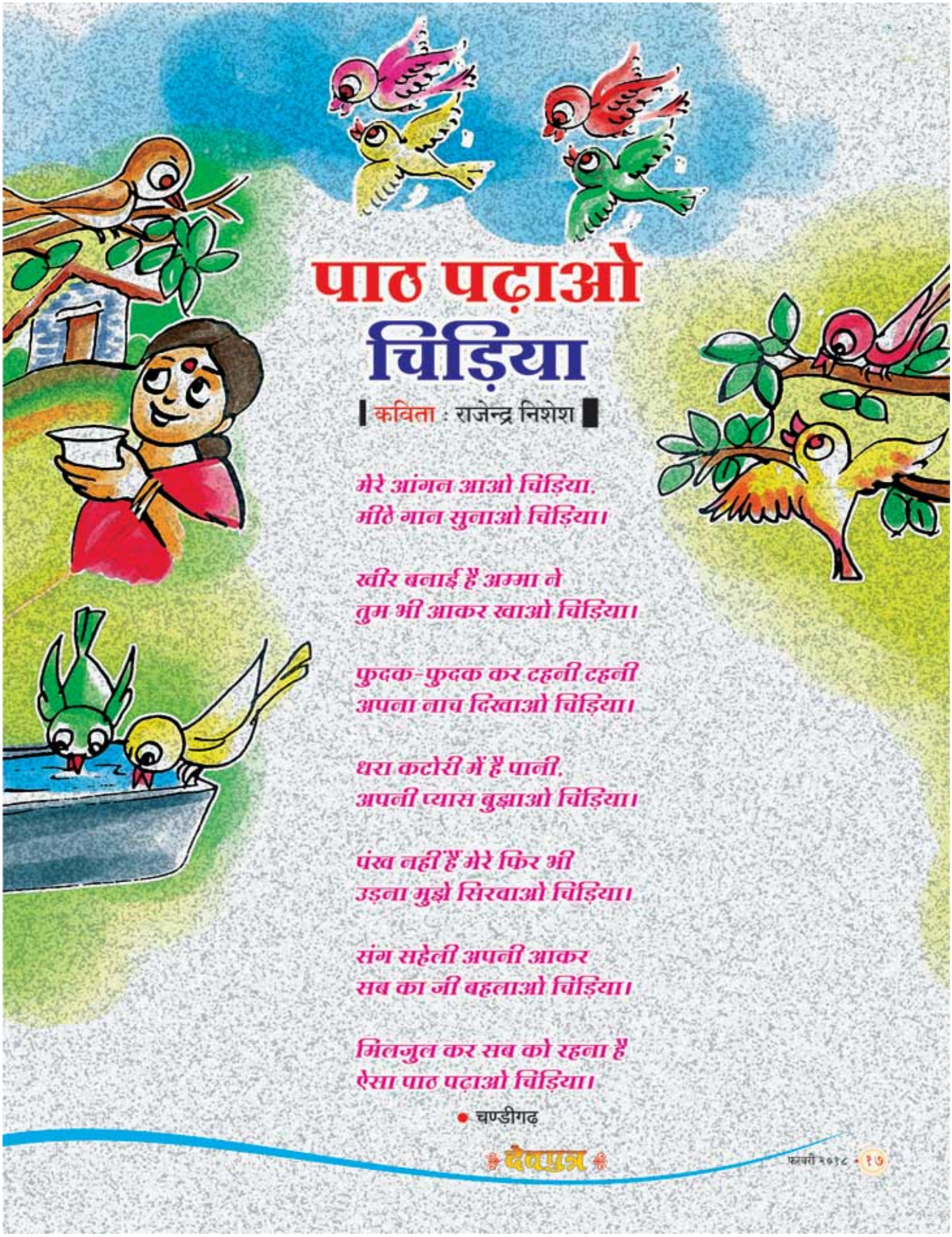

पाठ पढ़ाओ चिड़िया

कविता : राजेन्द्र निशेश

मेरे आंगन आओ चिड़िया,
मीठे गान सुनाओ चिड़िया।

खीर बनाई है अम्मा ने
तुम भी आकर खाओ चिड़िया।

फुदक-फुदक कर टहनी टहनी
अपना नाच दिखाओ चिड़िया।

धरा कटोरी में है पानी,
अपनी प्यास बुझाओ चिड़िया।

पंख नहीं हैं मेरे फिर भी
उड़ना मुझे सिखाओ चिड़िया।

संग सहेली अपनी आकर
सब का जी बहलाओ चिड़िया।

मिलजुल कर सब को रहना है
ऐसा पाठ पढ़ाओ चिड़िया।

● चण्डीगढ़

सूर्य का पड़ौसी

बुध

सचित्र प्रस्तुति-
संकेत गोस्वामी

सूर्य का सबसे नजदीकी ग्रह है- बुध. यह सूर्य से 580 लाख किलोमीटर की औसत दूरी के परिक्रमा पथ पर 48 किलोमीटर प्रति सेकंड की तेज रफ्तार से चक्कर लगा रहा है. सूर्य की परिक्रमा करने में इसे केवल 88 दिन (पृथ्वी के) लगते हैं.

बुध ग्रह पर हीलियम गैस की एक बेहद पतली परत है. इतनी बारीक कि अगर 6.4 किलोमीटर (4 मील) में फैली गैस को इकट्ठा कर लें तो उससे एक बच्चे का, एक छोटा सा गुब्बारा ही भरा जा सकेगा.

अपने अक्ष पर केवल दो डिग्री झुका हुआ यह छोटा चट्टानी ग्रह पृथ्वी के उपग्रह चंद्रमा से कुछ बड़ा है. लेकिन अक्ष पर बुध बहुत धीरे चलता है.

बुध की सूर्य से न्यूनतम दूरी है 459 लाख किलोमीटर और अधिकतम दूरी 697 लाख किलोमीटर. इसका एक पूरा दिन पृथ्वी के 58 दिन 16 घंटों के बराबर होता है. सूर्य से नजदीकी बुध को गर्म भी बनाती है और प्रकाशमय भी. इस पर दिन का तापमान 430 डिग्री से. तक होता है जबकि यहां रात में तापमान –170 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता है. बुध की सतह से सूर्य पृथ्वी के मुकाबले 3 गुणा बड़ा और अधिक प्रकाशमान दिखता है.

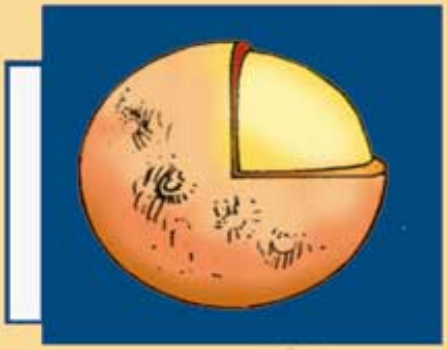

बुध का अंदरूनी कोर (मध्य भाग) 3600 कि.मी. व्यास का है. जबकि इसका कुल व्यास 4878 कि.मी. है. बुध के दोनों ध्रुवों पर छोटी सी आइसकैप मौजूद है. लेकिन यह पानी की नहीं अम्लों की है.

अंतरिक्ष यान मरीनर-10 ने 1974 से अपनी 3 यात्राओं में बुध ग्रह के 4300 करीबी चित्र खींचकर पृथ्वी पर भेजे. तब देखने में आया चंद्रमा की तरह इस पर भी क्रेटर, पहाड़ और चिकने समतल क्षेत्र है. इससे पहले पृथ्वी की दूरबीनों से बुध को केवल सतही तौर पर देखा जा सका था.

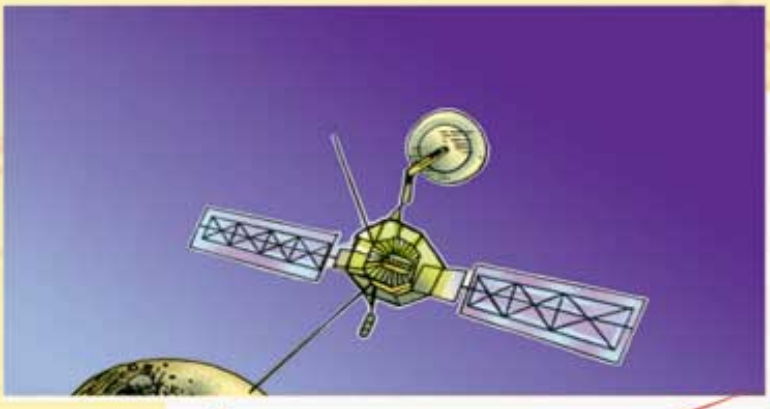

समाप्त

मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक भी

राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र

जानकारी : आइवर युशिएल

देश की राजधानी दिल्ली में प्रगति मैदान के गेट नं. एक के ठीक दायी तरफ स्थित एक केन्द्र है जो इतिहास, मनोरंजक और प्रशिक्षण का मिला जुला एक अद्‌भुत प्रस्तुतीकरण है। इसमें भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी के पांच हजार वर्षों की कहानी के साथ सौ से अधिक संचालन योग्य प्रदर्श यानि एक्जिबिट्स हैं, गतिशील तारामण्डल है, और इन सबके साथ–साथ स्वचालित रूप से ऊपर–नीचे होती और बेहद घुमावदार स्ट्रक्चर पर भागती दौड़ती व कुशल कलाबाजों सा प्रदर्शक करती सोलह ऐसी गेंदे यहाँ आने वाले हर दर्शक को आश्चर्य चकित कर देती हैं। जो अपने इन क्रियाकलापों के दौरान न सिर्फ ध्वनि का सृजन करती हैं बल्कि बिजली भी पैदा करती हैं और ऊर्जा का रूपान्तरण भी।

केन्द्र के उल्लेख के अनुसार यह विशाल ऊर्जा गेंदों वाला स्ट्रक्चर विश्व का अपने तरह का सबसे बड़ा प्रदर्श है। सोलह गेंदों का चौदह मीटर तक उठाकर घुमावदार पथों में छोड़ा जाता है। सुदृढ़ फाटक इन्हें विभिन्न घुमावदार पथों पर प्रेषित कर देते हैं। गेंदें अपने–अपने पथ पर आगे बढ़ते हुए तरह–तरह की कलाबाजियां दिखाती है। ये अपकेन्द्रीय बल Centrifugal force से प्रभावित होती हैं, त्वरित Acceleratar में से गुजरते हुए अपनी गति को बढ़ती हैं, ढलान से दौड़ते हुए जाइलोफोन को बजाती है, एक प्लेट पर गिरकर काफी ऊँचाई तक उछल जाती हैं और इस प्रकार प्रत्यस्थता Elasticity की भूमिका को प्रदर्शित करती हैं, उत्थापक Eleragir के सिद्धांत को प्रदशित करती हैं, एक वाद्ययंत्र बजाती हैं, बिजली पैदा करती है, और अपने पथों से यात्रा करते हुए तरह–तरह की गतियों का प्रदर्शन कर एक बेहद विस्मयकारी और लुभावना दृश्य प्रस्तुत कर देती हैं।

दर्शक जब ऊपर के तल पर चढ़ते हैं तो ये गेंदे ऊपर की ओर पार्श्व के पथों में अपनी यात्रा अविरल जारी रखती हैं। रोचकता लाने के लिए कुछ स्थानों पर गुरुत्वाकर्षण द्वारा नियंत्रित भ्रमणशील भाग भी शामिल किये गए हैं। ऊर्जा गेंद वास्तव में एक ऐसा संयोजन है जो जिज्ञासु दर्शकों के मस्तिष्क में कई तरह की नई जिज्ञासाएं पैदा कर इन क्रियाओं के पीछे छीपे आधारभूत सिद्धांतों के प्रति उनकी रुचि जगाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इसके अलावा विज्ञान के लोकप्रियकरण का अपना मुख्य उद्देश्य सार्थक करते फन साइंस विभाग में ऐसे

विज्ञान आधारित प्रयोगों का समावेश है जो वास्तव में मनोरंजन से लबालब भरे हैं। समुद्री लहरें पैदा करना, बुलबुले को विभिन्न माध्यमों से ऊपर उठते देखना, फुसफुसाहट को कक्ष के दूसरे सिरे पर स्पष्ट सुनना, शटल को आगे–पीछे दौड़ाना, गेंद को लूपों में चक्कर लगवाना, अपने कटे सिर को चाँदी की थाली मं पेश होते देखना और अनोखे भूत का सामना करते करते दर्शकों का समय कैसे बीत जाता है, उन्हें पता ही नहीं चलता। दृष्टिभ्रम, दर्पण, चुम्बकत्व, कंपन, प्रकाश और ध्वनि आदि विषयों से संबंधित यह न जाने कितने प्रदर्श मौजूद हैं जारे आगन्तुकों के आकर्षण का केन्द्र बन जाते हैं।

यहां के सृजन विभाग में बच्चों को सिर्फ खिलौनों से खेलने का अवसर ही नहीं मिलता। बल्कि वे स्वयं प्रयोग करने का आनंद भी उठा सकते हैं और साथ ही खोज के रोमांच का अनुभव भी कर सकते हैं।

भारत में विभिन्न युगों से प्रयुक्त सूचना एवं संचार के क्रांतिकारी साधनों से परिचय कराती विज्ञान केन्द्र की वीथिका में प्रवेश के साथ ही दर्शक एकाएक मानों १९४७ के उस ऐतिहासिक दौर में जा पहुंचते हैं जब स्वाधीनता का प्रथम बार साक्षात्कार करता एक विशाल जनसमुदाय लाल किले के सामने खड़ा देश में लोकतांत्रिका बनने की तैयारी करती सूचना प्रणाली का गवाह बना था। उस महत्वपूर्ण घटना के अवसर पर संचार के जिन विविध साधनों का उपयोग किया गया था, उनका प्रदर्शन विशेष रूप से उल्लेखनीय माना जा सकता है।

यहां ध्वनि दृश्य प्रस्तुति के माध्यम से अतीत काल की ऐसी द्रुतगामी यात्रा संभव बन पाती है जो अपने आप में लम्बे समय तक न भुलाये जा सकने वाला एक अनुभव दे जाती है। फिर इससे आगे बढ़ते दर्शक एक ऐसी गुफा में प्रवेश करते हैं जहां दीवार पर प्राचीन मानव द्वारा बनाये गए चित्र संचार के ही साधनों के प्रतीक हैं।

कुछ भी हो विज्ञान लोकप्रियकरण के क्षेत्र में ऐसे केन्द्र के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। देश की राजधानी के साथ–साथ दूसरे महानगरों के दायरे से बाहर भी इन केन्द्रों की स्थापना चाहे छोटे स्तर पर ही सही, समाज की सोच को निश्चय ही परिवर्तित कर, अंधविश्वास में जकड़े मस्तिष्कों में विज्ञान का प्रकाश फैलाने में कहीं न कहीं और कुछ न कुछ मदद तो मदद करेगी ही जिसके परिणाम विलक्षण न भी हो पर लक्ष्य की ओर बढ़ते इन कदमों पर अपनी विश्वसनीयता की मोहर लगाने भर के लिए तो ये पूरी तरह सक्षम होंगे, इसमें तनिक भी संदेह नहीं।

● बरेली (उ.प्र.)

ये भी धन्य हैं
[भाग-२]

मसूद अपने घोड़ों को कभी चलाता, कभी दौड़ाता बहुत दूर तक जा पहुंचा। फिर भी उसको नजर कुछ नहीं आया।

अब सुबह हो रही थी। छः सौ सैनिकों के पैरों के निशान देखकर यह पक्का हो गया कि शिवाजी भाग निकला है। उसने घोड़े तेज दौड़ाए।

मराठा सैनिकों के लिए जिंदगी और मौत का खेल शुरु हो गया। सुबह का समय था। छः सौ मावले रात के दस बजे से जान हथेली पर रखकर और महाराज को कंधे पर उठाकर भाग रहे थे। थककर रुकने का मतलब था मौत। अब विशालगढ़ का किला दस मील की दूरी पर था। दोनों सेनाओं का फासला कम होता जा रहा था। स्वराज्य की तकदीर का फैसला होने वाला था।

अब विशालगढ़ सामने नजर आने लगा। सूर्य बादलों को चीरकर बाहर आ गया। महाराज की निगाह विशालगढ़ पर लगी थी। १३ जुलाई १९६० की तिथि थी। फासला छः–सात मील का शेष था। परन्तु यही फासला मानों दुगुना हो गया। दौड़ते भागते मावले गजापुर की घाटी तक तो पहुंचे, परन्तु सब थक कर चूर हो गए थे, आगे बढ़ना दूभर हो गया फिर मैदानी इलाके से जाना मानों मौत का सामना करना था। विशालगढ़ अभी भी चार मील दूर था।

विशालगढ़ पहुचना भी एक भयानक प्रसंग हो सकता है, क्योंकि विशालगढ़ को घेरे जसवन्तराव दलवी और सुर्वे डटे थे। उस घेरे को काटकर पहुंचना असम्भव था। मसूद के साथ दो–दो हाथ करने का अर्थ था दोनों सेनाओं के बीच उलझ जाना।

बाजीप्रभु ने यह सब जान लिया। इस संकरी घाटी में ही मोर्चा लगाने का निश्चय पक्का हो गया। बाजीप्रभु ने शिवाजी से कहा– ''आप यहां से आगे चलें। मैं सैनिकों के साथ मोर्चे पर डटा रहूंगा। एक भी मुगल आगे बढ़कर नहीं जाने पायेगा। जब तक गढ़ तक नहीं पहुंच जाते, तब तक मैं यह घाटी रोके रहूंगा। आप निश्चित होकर आगे बढ़े। समय हाथ से निकल रहा है। कृपया आप जल्दी करें।'' महाराज विचार कर ही रहे थे कि फिर बाजीप्रभु ने कहा– ''महाराज, आप हमारा विचार न करें। आप जैसे लाखों के अन्नदाता सही सलामत रहें, तो मेरे जैसे, हजारों पैदा हो जायेंगे। देर न करो, महाराज, मेरा प्रणाम स्वीकार करो। जब तक तोपों की आवाज नहीं सुनूंगा, मैं प्राण नहीं छोड़ूगा।'' बाजीप्रभु ने झुककर महाराज के चरण छूए और हाथ जोड़कर खड़े हो गए।

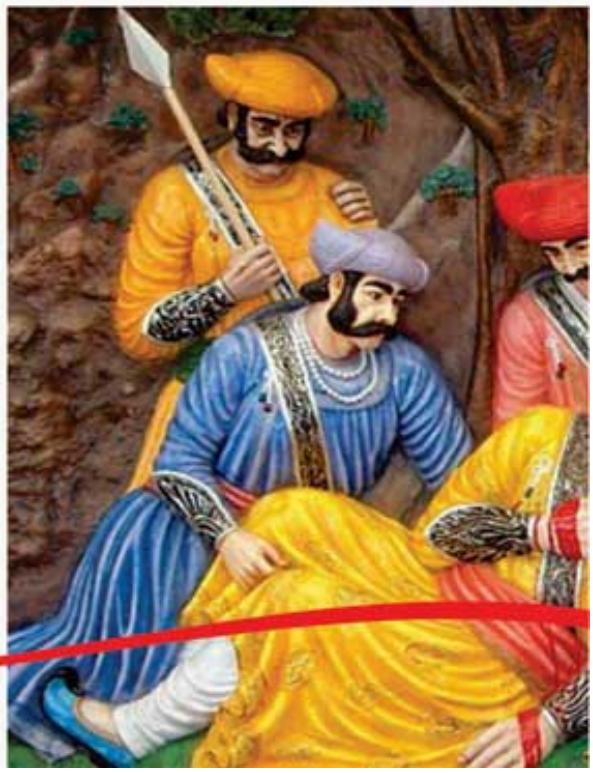

शिवाजी चल पड़े। एक बार पीछे मुड़ कर देखा तो बाजी के साथ रुके सब सैनिकों ने एक बार फिर प्रणाम किया। जिस रास्ते से महाराज गए थे, वहाँ कि मिट्टी सबने अपने माथे पर लगाई।

सेनापति बाजीप्रभु देशपांडे के साथ ही सबने सूर्य भगवान की ओर हाथ उठाकर युद्धनाद किया– ''हर हर महादेव।''

मसूद के सैनिकों ने भी जोर से नारा लगाया– ''अल्ला हो अकबर।''

बाजीप्रभु अपने जीवन के आखिरी मोड़ पर खड़े थे। मौत से दो–दो हाथ करने थे। लड़ाई शुरु हो गई। मसूद की सेना के दस्ते के बाद दस्ते आ–आकर टकरा रहे थे और मराठा सैनिकों से मार खाकर वहीं ढेर होते जा रहे थे।

इधर महाराजा विशालगढ़ का किला चढ़ने लगे। साथ में ३०० सैनिक थे। जसंवतराय दलवी ओर सुर्वे घेरा डाले थे। महाराज एकाएक पीछे से जा लपके। एक ही धावे में घेरा तोड़ना था। दोनों हाथों से तलवार चलाते बढ़ रहे थे। मराठा सैनिकों ने महाराज के चारों और घेरा डाला हुआ था।

लगता था स्वराज्य अपना रास्ता बना रहा है। इधर बाजीप्रभु अपने सैनिकों समेत दर्रे में डटा था। मावले ऊँचाई पर चढ़कर बड़े–बड़े पत्थर लुढ़का रहे थे। मसूद के सैनिक हैरान थे। हम तो यहाँ शिवाजी को ढूंढने आये थे, पर यह तो मौत की घाटी नजर आती है। करें तो क्या करें? पीछे भी हम लौट नहीं सकते, आगे बढ़ना कठिन हो रहा था।

मसूद की सेना और बाजीप्रभू के मुट्ठी भर सैनिकों में भीषण युद्ध चल रहा था। अत्यधिक थके होने के कारण मराठा सैनिकों का बल कम पड़ता जा रहा था। बहुत से दम तोड़ रहे थे। अनेक की सांस फूल रही थी। जो शेष थे, वे भी भली भाँति जानते थे कि अधिक देर तक मुस्लिम सेना से मुकाबला करना असम्भव रहेगा परन्तु खून की अंतिम बूंद तक लड़ने का उनका निश्चय अटल था।

बाजीप्रभु के शरीर पर तो अनेकों घाव लगे थे। फिर भी वह पूरे उत्साह के साथ अपने सैनिकों में प्रेरणा का संचार कर रहा था। उनकी तलवार जिधर को घूम जाती उधर ही खाई पैदा हो जाती। उसे यह चिंता नहीं थी हारेंगे या जीतेंगे। चिन्ता केवल यह थी कि महाराज शिवाजी के दुर्ग में सकुशल पहुंचने तक वे डटे रह सकें।

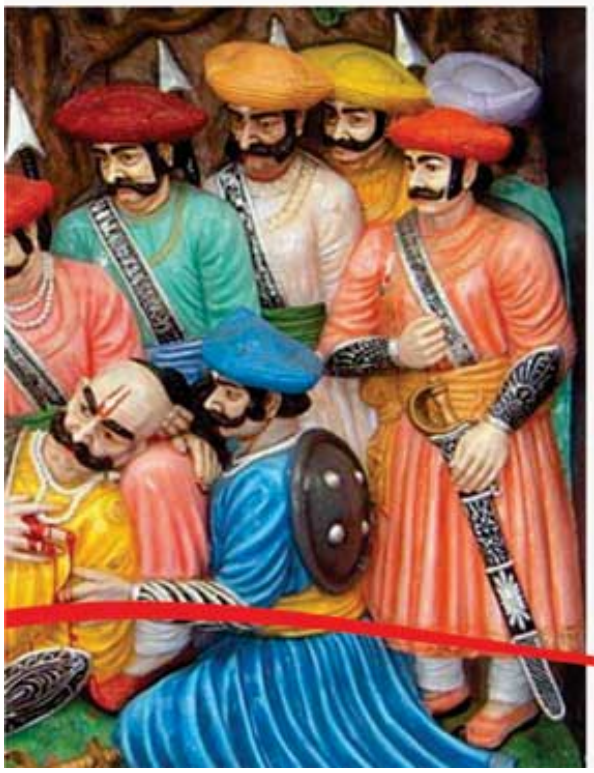

अचानक बाजीप्रभू ने देखा, उसका एक मावला योद्धा घायल हो जीवन की अंतिम सांसे ले रहा है। वेदना बड़ी तीव्र है परन्तु प्राण निकल नहीं रहे है। दौड़कर बाजीप्रभु ने सैनिक का सिर अपनी हथेलियों में थाम लिया और उसकी आँखों में झांककर बोला– ''शाबास, मेरे बहादुर, तुम धन्य हो जो देश के काम आये। हंसते–हंसते विदा लो। मैं भी शीघ्र वहीं आ रहा हूँ। मृत्यु से कहना मेरी बाट देखे। हाँ, तब तक तो उसे बाट देखनी ही पड़ेगी जब तक मैं महाराज को दिये वचन को पूरा नहीं कर लेता।''

और तभी मुसलमान सैनिक बाजीप्रभु पर टूट पड़े।

उधर शिवाजी महाराज को एक–एक पग बढ़ने के लिए जी–जान से जूझना पड़ रहा था। दोपहर के दो बज गये।

महाराज बेचैन थे। उन्हें एक और दुर्ग नजर आता तो दूसरी ओर बाजीप्रभू। वे सोच रहे थे– क्या हाल होगा मेरे बाजी का। मैंने उसे मौत

की गली में छोड़कर दुर्ग की राह ली। स्वराज्य की खातिर मेरे साथियों ने कौन सा बलिदान नहीं किया।

क्रोध से लाल हो वे चीख उठे– ''सुर्वे, अब तेरा घेरा मुझे बांधकर नहीं रख सकता। मुझे दुर्ग पर पहुंचने में अब और अधिक देर नहीं करनी है। मुझे पहुंचना ही होगा। बाजीप्रभु संकेत की प्रतीक्षा में न जाने क्या–क्या संकट अपनी जान पर झेल रहा है। मुझे जल्दी से जल्दी तोप दागनी है। सुर्वे, तू तो क्या अरग साक्षात् काल भी मेरे रास्ते में अड़ा तो मैं माँ भवानी की सौगंध खाता हूं कि एक बार तो उसके भी तीन टुकड़े कर उसकी सीढ़ियाँ बना दुर्ग पर पहुँचूंगा। और सुर्वे का घेरा टूट गया। महाराज दुर्ग की ओर ऐसे लपके मानों माँ दुर्ग ने पुकारा है। पैरों में पवन की गति आ गई।

उधर बाजीप्रभु को चारों ओर से घेर लिया गया। तलवारें खनखना रहीं थी। युद्ध का कौन सा कौशल बाजीप्रभु ने नहीं दिखाया। आश्चर्य यही था कि शरीर का कोई भी हिस्सा घाव से मुक्त न होने के बावजूद वह लड़े जा रहा था। सांस फूल रहीं थी। अचानक दो मुसलमान सैनिक निकट से वार करने को बढ़े। बाजीप्रभु ने सारी हिम्मत बटोर कर ललकारा– ''मूर्खों! बाजीप्रभु जब चाहेगा तभी मरेगा, उससे पहले नहीं। पागलों की तरह तुम जब तक चाहो मुझसे टकराते रह सकते हो।''

उधर अपने मुट्ठी भर बचे सैनिकों को उसने आशा बंधाई–''खून की अंतिम बूंद तक लड़ना मेरे वीरों! मर जाओगे तो भी गम नहीं होगा। मैं भी आऊंगा, लेकिन वचन पूरा करने के बाद। मृत्यु से जाकर कह देना तोप आंधी मरे ना बाजी, सांगा मृत्य, ला (जब तक तोप की आवाज नहीं आतो, बाजी नहीं मरेगा) तभी जोर का धमाका हुआ।

बाजी के मुखमण्डल पर कर्त्तव्य पूर्ति का आनन्द नाचने लगा और इसी आनन्द को अपने दिवंगत साथियों में बाँटने उसके प्राण चल पड़े। इधर बाजीप्रभु का निष्प्राण शरीर नीचे आ गिरा और उधर किले की प्राचीर पर खड़े शिवाजी महाराज की आँखों से अश्रु धारा बह निकली।

(मार्च अंक विशेषांक होने से शेष गाथा अप्रैल अंक में)

लग गई ठंडी

कविता : डॉ. अनिल 'सवेरा'

सूरज दादा छाता लेकर,
निकल पड़े हैं अंबर में।
लगने लगी है सर्दी उनको,
जैसे लगे दिसम्बर में।

बोल गई है कुकड़ू कूँ-कूँ,
हो गई है धीमी चाल।
दादा जी को लग गई ठंडी,
काँप-काँप हो गए बेहाल।

सोच रहे कोई आग जला दे,
मैं भी तो लूँ थोड़ा ताप।
दूर भगा दूँ सर्दी को मैं,
दया करो प्रभु मुझ पर आप।

● जगाधरी (हरियाणा)

|| बाल प्रस्तुति ||

शोर

कहानी : अलीशा सक्सेना

मैं अपनी बहन अर्शी के साथ कैसल बल्र्ड में बहुत मजे कर रही थी पर मुझे फन सिटी की एक बात अच्छी नहीं लगती थी और वह है वहाँ का शोर फिर भी मुझे बहुत मजा आ रहा था। जब मैं ऊपर कैसल पहुंची तो वहाँ एक खटिया पड़ी थी। मैं उस पर लेट गई न जाने कब मेरी आँख लग गई। रात को तीन बजे मेरी नींद खुली तो मैंने देखा पूरा मॉल बन्द हो चुका था। और चारों ओर सन्नाटा और अंधेरा था मैं फन सिटी के बाहर आई कि अचानक नीचे पड़ा प्यानो अपने आप बज उठा और ये क्या सारी शॉप्स की डमी वहाँ आकर नाचने लगी। कोई हवा में नाच रही थी कोई एक्सेलेटर पर कोई कहीं और सारे बच्चों वाले डमी शोर मचाते हुए फन सिटी में घुस गए और विडियो गेम खेलने लगे चारों ओर शोर सारे विडियो अपने आप चलने लगे ये सब देखकर मैं बुरी तरह डर गई और एक कोने में भागी और वहीं बैठ गई। मुझे ये सब बड़ा डरावना लग रहा था मैं डर कर काँपने लगी और अपनी दादी का बनाया वो मंत्र याद करने लगी जो उन्होंने बताया था कि जब डर लगे तो इसे बोलना, डर भाग जाएगा। पर मुझे याद ही नहीं आ रहा था, शोर से मेरे कान फटे जा रहे थे, और डर से मैं पसीना–पसीना हो रही थी। मुझे इतना शोर अच्छा नहीं लगता है।

कि तभी मुझे मेरी माँ की आवाज सुनाई दी अलिशा! उठो विद्यालय नहीं जाना है क्या? मेरी आँख खुल गई।

चारों ओर कितनी शांति थी और फन सीटी में कितना शोर, क्या इतना शोर हमारे कानों के लिए अच्छा हैं? यह फन सिटी वालों को क्यों समझ नहीं आता?

● अहमदाबाद
(गुज.)

रोमांचक अभियान

कहानी : अरविन्द कुमार साहू

वे देश के महान वैज्ञानिक थे। अपने सहयोगी के साथ एक महत्वपूर्ण मिशन के लिए प्रयोग कर रहे थे। वे एकाग्रचित थे, आशान्वित थे, अपने काम में दक्ष और राष्ट्र के प्रति पूरी निष्ठा से समर्पित भी। उनकी प्रयोगशाला अनेक प्रकार के मूल्यवान उपकरणों और रासायनिक पदार्थों से परिपूर्ण थी। यहाँ वे रोमांचक और खतरनाक प्रयोगों करते थे। किन्तु इसमें जरा सी असावधानी न केवल उनकी प्रयोगशाला को नष्ट कर सकती थी, अपितु उनके अमूल्य जीवन को लीलकर राष्ट्र की प्रगति को वर्षों पीछे धकेल सकती थी।

वे भी यह सब भली भांति जानते थे और एक-एक कदम फूँक-फूँक कर रख रहे थे। दरअसल इस अभियान में वे राष्ट्र की सुरक्षा से जुड़े एक उपग्रह प्रक्षेपण यान की ईंधन व्यवस्था को अंतिम रूप दे रहे थे। थुंबा परियोजना स्थल स्थित पेलोड क्रियान्वयन प्रयोगशाला में जब उस दिन दोनों ने कदम रखा तो वातावरण भी भीषण गर्मी उनसे होड़ लेने को आतुर थी। पसीना शरीर में किसी भी कीमत पर रुकने को तैयार न था। पर ऐसे प्रतिकूल वातावरण भी उन वैज्ञानिकों के लक्ष्य की दीवार नहीं बन सकते थे। वे अत्यंत सावधानीपूर्वक प्रयोगशाला में दाखिल हो गए। आज उनका प्रयोग उपग्रह प्रक्षेपण यान में भरे जाने वाले ईंधन के लिए सोडियम और थरमाइट के मिश्रण पर था। सोडियम इतना ज्वलनशील होता हैं कि किसी भी प्रकार के वातावरण के संपर्क में आते ही आग पकड़ लेता है। आग भी ऐसी खतरनाक जो पानी से नहीं बुझाई जा सकती। सोडियम में थरमाइट का मिश्रण किसी भी समय भीषण विस्फोट को आमंत्रित कर सकता था। पर ऐसी ही परिस्थितियाँ तो ऐसे वैज्ञानिकों के लिए अग्निपरीक्षा होती हैं। प्रयोगशाला को बाहरी वातावरण से सुरक्षित रखने के लिए खिड़की दरवाजे अच्छी तरह बंद कर दिये गए। फिर वे अपने काम में जुट गए। उन्होंने अपने प्रयोग शुरु कर दिये। एक दो तीन चार पाँच ही नहीं बल्कि पूरे छह बार परीक्षण सफल हो चुके थे। अब उन्हें यह देखना था कि सोडियम-थरमाइट का यह मिश्रण ठीक ढंग से भरा जा जा चुका है या नहीं। इसे सुनिश्चित करने के लिए वे पेलोड रूम में दाखिल हुए और उसका निरीक्षण करने लगे। उनकी मेहनत सफलता का मूर्त रूप ग्रहण करती जा रही थी। किन्तु प्रकृति की कठोरता को शायद उनकी सफलता रास नहीं आ रही थी। वातावरण की उमस शरीर का खून भी पसीने के रूप में खींच लेना चाहती थी। होनी को कुछ और ही मंजूर था।

तमाम सावधानियों के बावजूद साथी वैज्ञानिक के मेहनत के पसीने की एक बूंद सोडियम के ढेर पर टपका गयी और तबाही मचाने वाली ताकतों के लिए मेहनत का पसीना भी ज्वालामुखी बन गया। एक भयंकर विस्फोट हुआ और कमरे की दीवारें दहक उठी। कोई कुछ समझ पाता, उससे पहले ही सोडियम ने भयंकर आग पकड़ ली थी। अन्य उपकरणों और रासायनिक प्रक्रिया ने आग में घी का काम किया। अचानक हुई इस घटना से पहले तो यह समझ ही नहीं आया ये कैसे और क्या हो गया?... और जब तक समझ आया, लगातार देर होती चली गयी। सोडियम की ये आग तो पानी से भी नहीं बुझाई जा सकती थी। अब क्या होगा? एक पल को तो लगा कि वे लोग किंकर्तव्य विमूढ़ हो गए हैं।

खिड़कियाँ और दरवाजे पहले से ही बंद थे और आग थी कि तेजी से फैलती जा रही थी। लगभग पूरा कमरा उसकी चपेट में आ गया था। धुआँ और जहरीली गैसें किसी भी समय उनके जीवन पर ग्रहण लग सकती थी। उनका दम घुटने लगा था। खाँसते-खाँसते सांस गले में अटकती प्रतीत हो रही थी। हाथ को हाथ नहीं दिखाई दे रहा था। किन्तु आखिर किया क्या जा सकता था।

सचमुच, ऐसे क्षणों में ही मनुष्य के विवेक- बुद्धि की वास्तविक परख होती है। जो संकट की घड़ी में तत्काल उचित निर्णय नहीं ले पाता, वह मौत से हार जाता है। जो विवेक का सही इस्तेमाल करते हुए आखिरी क्षण तक हिम्मत नहीं हारता, वो मौत की भयंकर आग से भी कुन्दन की तरह तप कर और चमकता हुआ बाहर निकलता है।... और कहना न होगा कि इन महान वैज्ञानिकों में साहस, धैर्य और तत्काल

उचित निर्णय लेने वाले विवेक की कमी न थी।

वे आग से बचने के लिए किसी प्रकार टटोलते– भागते हुए एक खिड़की तक पहुँच गए। किन्तु यह भी बंद थी। बंद क्या एक प्रकार से सील थी। काँच के फ्रेम में पूरी तरह कसी हुई। लेकिन शीशे के उस पार बाहरी दुनिया की एक झलक दिखाई देते ही उनमे गजब का आत्मविश्वास भर गया। जीवन बचाने की लालसा बढ़ गई। अब यही एक आशा की किरण बीच थी, और शायद ईश्वर ने भी इसी बहाने उनकी सहायता करने का मन बना लिया था। एक बात बहुत अच्छी निकली कि काँच के फ्रेम के पार लोहे की जाली या लकड़ी के पल्ले नहीं लगे थे। वरना और मुश्किल बढ़ जाती।

अब यही उनके लिए आशा की अंतिम किरण थी। उस पार जीवन से भरी उन्मुक्त दुनिया और इस पार मौत का भीषण तांडव। जिंदगी और मौत के बीच महज एक काँच की दीवार और क्षण भर का विवेक पूर्ण निर्णय ही था। यह अदम्य साहस प्रदर्शित करने और मौत से दो–दो हाथ करने का समय था। और वहीं साथी वैज्ञानिक जिसके पसीने की मात्र एक बूंद मौत का वट वृक्ष बन गई थी। जिससे इस प्रयोगशाला और अमूल्य वैज्ञानिकों के जीवन पर संकट आ गया था, उसी की तीक्ष्ण बुद्धि ने पल भर में ही आर–पार का फैसला कर डाला था।

उसने अपने हाथों के घूंसे बनाए और काँच की खिड़की पर ताबड़तोड़ वार करना शुरु कर दिया। काँच की वह मोटी दीवार जिंदगी का यह भीषण प्रहार देर तक न झेल सकी। झनाक–झनाक टूटकर बिखर गई। बाहर की हवा का एक ताजा झोंका महसूस होते ही मानो तन में प्राण लौट आए थे। रास्ता मिल गया तो झट उसने अपने वरिष्ठ साथी को बड़ी मुश्किल से खिड़की पर चढ़ाया और कमरे के पार निकाल दिया। फिर स्वयं भी किसी प्रकार फाँदकर बाहर आ गया। प्रयास सफल हो गया था। मौत की आग कमरे में ही फुफकारती रह गई थी।

खतरे से बाहर निकल कर दोनों ने चैन की सांस ली। कुशलता की दृष्टि से एक दूसरे को देखा। काँच तोड़ने से साथी वैज्ञानिक का हाथ बुरी तरह लहूलुहान हो गया था। उसे काँच के कई टुकड़े चुभ गए थे। भीषण आग में उसका शरीर भी कई जगह से झुलस गया था। पर यह असहनीय पीड़ा उस प्रसन्नता के मुकाबले कुछ भी न थे, जो उसने मौत पर विजय प्राप्त करके पायी थी। उसके चेहरे पर पीड़ा की जगह मुस्कान थे। दोनों वैज्ञानिक भावावेश में एक दूसरे के गले लग गए। हृदय से चिपक गए। साथी वैज्ञानिक को काफी दिनों तक अस्पताल में रहना पड़ा।

मौत से आँख मिचौली की यह घटना चाहे जितनी दुर्भाग्य पूर्ण रही हो, किन्तु उससे इन महान वैज्ञानिकों की कार्य क्षमता या लक्ष्य पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ा। वे स्वस्थ होकर पुनः अपने काम पर लौटे और अपने लक्ष्य को सफल बनाकर माने। इस घटना में मौत में आँख मिचौली खेलने वाले महान वैज्ञानिक कौन थे जानना चाहेंगे? वे थे परमाणु ऊर्जा विज्ञानी डॉ. सुधाकर और साथी वरिष्ठ वैज्ञानिक थे भारत में मिसाइल मैन, भारत रत्न और पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम।

● ऊंचाहार (उ.प्र.)

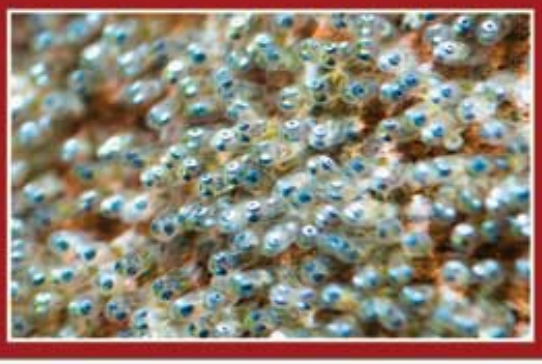

।। जानकारी ।।

अण्डों का रोचक संसार

आलेख : कैशाल जैन

इस आलेख में विषय अण्डों की खूबियां या कमियां न होकर कुछ दूसरा ही है। आज हम आपको विभिन्न आकार-प्रकार के अण्डों की रंग-बिरंगी और दिलचस्प दुनिया की सैर करवाएंगे।

इस धरती के स्तनपायी प्राणियों को छोड़कर लगभग सभी प्राणियों की उत्पति अंडे के द्वारा ही होती है। छोटे-मोटे कीड़े-मकोड़े से लेकर गिरगिट, घड़ियाल तक और नन्हीं सी चिड़िया से लेकर चील-बाजों जैसे परिंदों तक सब कोई अंडे की खोल से निकलकर ही रंग-बिरंगी और अलबेली दुनिया देख पाते हैं। स्तनपायी-प्राणी, जो शिशु के रूप में जन्म लेते हैं, वे भी गर्भावस्था में एक प्रकार के खोल के भीतर ही क्रमिक विकास की सीढ़ियां तय करते हैं।

अंडों की दिलचस्प दुनिया में दाखिल होने से पहले, आइए हम इनके बारे में फैली गलतफहमी दूर कर लें कि सभी अंडों का आकार अंडाकार होता है। अंडों की इस बहुरंगी दुनिया में आपको गोल, तिकोने, आयाताकार, वर्गाकार, चौकोर और न जाने कितने विभिन्न आकारों के अंडे देखने को मिलेंगे। कुछ अपवादों को छोड़कर आमतौर पर परिंदों के अंडे अंडाकार होते हैं। हाँ, यह जरूर है कि कुछेक प्रजातियों के पक्षी गोल या तिकोने अंडे भी देते हैं। कीट-पंतगों की एक प्रजाति के अंडे ईंटों के आकार के होते हैं। स्टिक इंसेक्ट नामक कीट द्वारा प्रजनित अंडों का आकार ढक्करदार सुराही की शकल में होता है। हार्न शार्क नामक मछली के अंडे ऊपर से चौड़े और नीचे से क्रमशः संकरे होते जाते हैं।

अंडों के छिलकें, जिसे अंडा कवच कहा जाता है, इनमें श्वासोच्छवास के लिए असंख्य छोटे-छोटे छिद्र होते हैं। मुर्गी के अंडों में इन छिद्रों की संख्या पन्द्रह हजार तक होती है। यह प्राकृतिक संवेष्टन का अनोखा चमत्कार है। अंड-कवच में एक विकासोन्मुख चूजे के लिए सारी सामग्री उपलब्ध होती है। प्रयोगों से पता चला है कि सामान्यतः आठ डिग्री सेल्सियस से कम तापमान पर अंडों में सड़ांध पैदा होने लगती है।

मुर्गी, बतख और कछुए के अंडों में क्रमशः ७३.७, ७१.० तथा ७६ प्रतिशत भाग पानी रहता है। आकार की दृष्टि से जलीय प्राणियों में सबसे बड़ा अंडा शार्क मछली का होता है। इसके अंडों की लम्बाई तीस सेंटीमीटर तथा चौड़ाई १५ से २० सेंटीमीटर तक होती है। परिंदों में शुतुरमुर्ग ही ऐसा प्राणी है, जो करीब ७ इंच लम्बा और २ किलो वजनी अंडा देता है। इसका अंडा बहुत मजबूत होता है और यह साधारण आघात से नहीं टूटता हे। हमिंग बर्ड नामक एक चिड़िया मटर के दाने के आकार के अंडे देती है।

अंडों का रंग सफेद होना तो आम बात है, लेकिन आपको यह जानकर हैरत होगी, कि कई प्राणियों के अंडे

गुलाबी, हरे, नीले, पीले जेसे आकर्षक रंगों के भी होते है। सिर्फ रंग ही नहीं, अलग-अलग पक्षियों के अंडों पर अलग-अलग तरह की डिजाइन या प्रिंट भी होती है। वेवलर नामक एक पक्षी की मादा गहरे नीले रंग के अंडे देती है, जबकि मछली की एक प्रजाति के अंडे रंग-बिरंगी कांच की गोलियों की तरह होते हैं। साईबेरिया के जंगलों में पाई जाने वाली एक नन्हीं चिड़िया के अंडे सुर्ख लाल रंग के होते हैं। कछुओं की एक प्रजाति के अंडे गुलाबी आभा लिये होते हैं। ब्राजील में पाई जाने वाली एक मछली, जो अंडे देती है, उन्हें देखकर लगता है, मानों इन पर किसी ने रंगों के छींटे मार दिए हों।

दरअसल पक्षियों के अंडों का रंग-रूप अलग होने के कुछ प्राकृतिक कारण हैं। कुछ पक्षी जमीन पर अंडे देते हैं, कुछ पेड़ों पर। जमीन पर अंडे देने वाले पक्षियों के अंडों को मनुष्य और अन्य पशु-पक्षियों से खतरा रहता है। अंडों को इन खतरों से बचाने के लिए प्रकृति ने ही एक प्रबंध किया हुआ है, जिसे सुरक्षात्मक अनुरंजन कहा जाता है। इसके कारण अंडों का रंग ऐसा होता है कि वे अपने आस-पास के वातावरण में घुल-मिल जाएं और किसी को नजर नहीं आए।

संख्या की दृष्टि से सर्वाधिक अंडे देने की क्षमता जलचर प्राणियों में खासतौर पर मछलियों में होती है। रोहू प्रजाति की मछली एक बार में तीन लाख से अधिक अंडे देती है। सांप की एक प्रजाति एक बार में लगभग ७५ अंडे देने की क्षमता रखती है। मादा मेंढक भी हजारों की संख्या में अंडे देते है। घरेलू छिपकलियों का सीमित परिवार के सिद्धांत में विश्वास है। वह एक बार में केवल दो अंडे देती है। जबकि गिरगिट १५ से २० तक अंडे देता है। कछुओं की अंडा-जनन क्षमता विभिन्न प्रजातियों के अनुसार सात से दो सौ पचास तक होती है। मादा घड़ियाल एक समय में १५ से ४५ तक अंडे देती है।

पक्षियों में कबूतर, कोयल, कौवा, गौरेया आदि २ से ४ अंडे देते है, जबकि पेंगुइन पक्षी एक बार में केवल एक ही अंडा देता है।

अपनी धूर्तता और चालाकी के लिए मशहूर कौवा कोयल से ही मात खाता है। कौए से अपने अंडों की सुरक्षा के लिए कोयल अक्सर अपने अंडे कौए के घौंसले में रख देती है और कौआ उन अंडों को अपना ही समझकर उनकी पूर्ण देखरेख करता है। इसी प्रकार माद कूक्कू नामक चिड़िया भी अपने अंडे दूसरी चिड़ियाओं के घोंसले में रख देती है। हमने अपने शत्रुओं से सुरक्षा के लिए कई पशु-पक्षियों को वातावरण के अनुरूप अपना रंग बदलते देखा है, किन्तु आपको यह जानकर अचंभा होगा कि कुछ प्राणियों के अंडे भी अपनी सुरक्षा की दृष्टि से अपना रंग वातावरण के अनुरूप परिवर्तित कर लेते हैं।

● भवानीमण्डी (राज.)

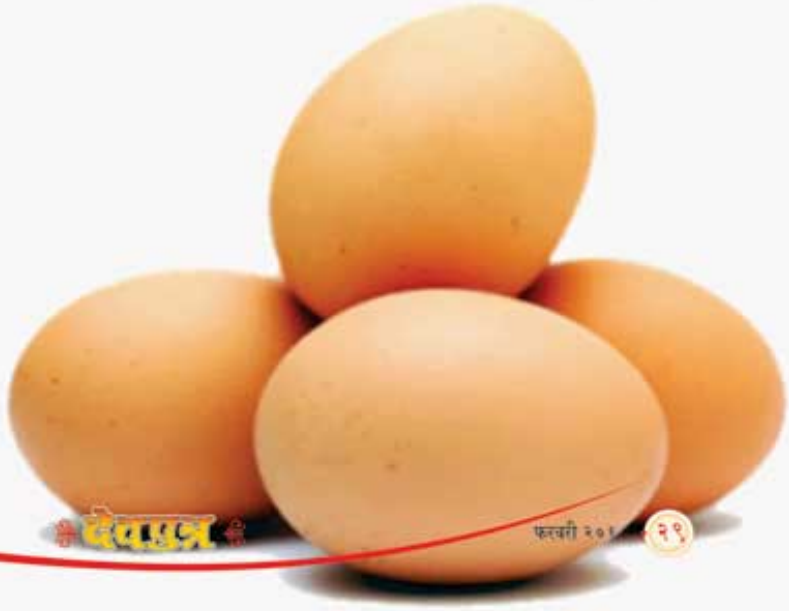

छोटा-बड़ा

विज्ञान दिवस पर बच्चों ने जुटाए महान वैज्ञानिक सत्येन बोस के चित्र आपको पता लगाना है कौन सा चित्र है किससे छोटा

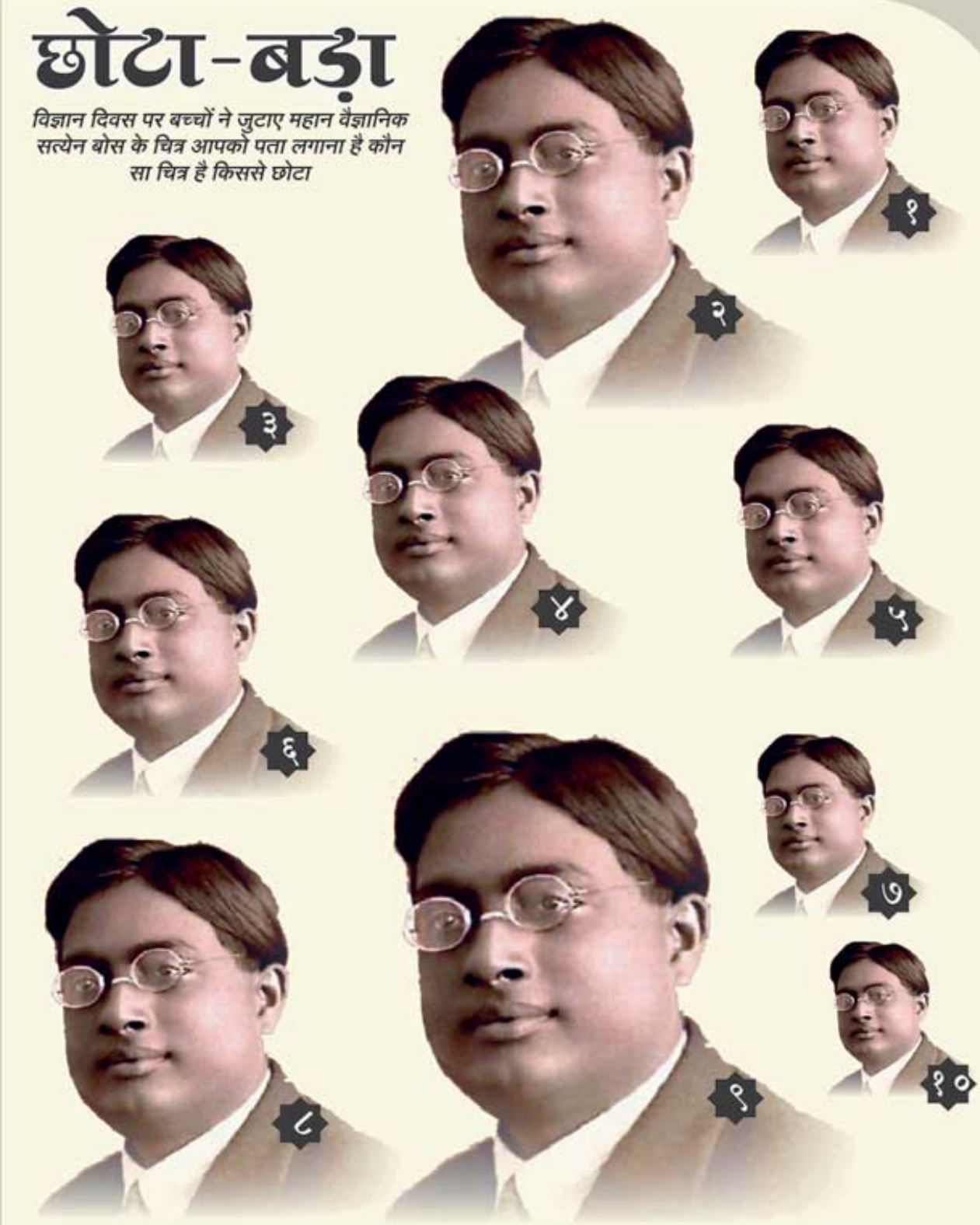

(उत्तर इसी अंक में।)

(गतांक के आगे)

कामरूप के संत साहित्यकार (८)

कथासत्र–७

संवाद : डॉ. देवेनचन्द्र दास 'सुदामा'

रविवार आता ही रहता है और जाता भी रहता है। शंकर, माधव और मनोरमा आम के नीचे बैठ गए। इतने में दादाजी भी आए। तीनों ने उठकर दादाजी के चरण स्पर्श किये। दादाजी जब अपने आसन पर बैठे तब तीनों उनके सामने बैठ गए।

दादाजी ने कहा– बताओ तो माधव! उस दिन हमने कहाँ समाप्त किया था और आज कहाँ से प्रारम्भ करना है?

माधव– उस दिन आपने कामरूप की कथा समाप्त की थी और आज कामरूपी संत साहित्यकारों के बारे में बताना है।

मनोरमा – दादाजी! कामरूपी सन्त साहित्यकार कितने हुए थे और उनमें प्रमुख कौन–कौन थे उसके बारे में हमें बताइए।

दादाजी– हाँ जरूर बताऊंगा। सबसे पहले यह बताओ कि हम भारत के किस भाग में रहते हैं?

माधव– नानाजी ! भारत एक विशाल देश है । हम उत्तर भारत में रहते हैं न?

दादाजी– हाँ, हम उत्तर भारत में रहते हैं। एक समय उत्तर भारत में कंधार से कामरूप तक करीब एक प्रकार की भाषा चलती थी।

मनोरमा – दादाजी ! उस भाषा में भी कोई साहित्य है क्या?

दादाजी– हाँ, उस भाषा में कुछ गीत है, जिनको ''चर्यापद या चर्यागीत'' कहते हैं। ये आसानी से समझ नहीं आते हैं। ये गीत कामरूप से कंधार के कवियों ने लिखे थे।

माधव– नानाजी ! कामरूपी के कवियों और साहित्यकारों के बारे में सुनाइए।

दादाजी – सुनो, बताता हूँ। उत्तर भारत में वर्तमान मान्य भाषा है असमीया, बाडो, बांग्ला, ओडिया, हिन्दी, मराठी, गुजराती, पंजाबी और सिंधी आदि। इसके अतिरिक्त सैकड़ों बोलियाँ तो हैं ही। उन भाषाओं में अब से ग्यारह बारह सौ वर्षों से साहित्य का सृजन होने लगा था। कामरूपी भाषा में भी उस समय से साहित्य की सृष्टि हुई थी। पहले कुछ लोक–साहित्य, याने मौलिक साहित्य समाज में प्रचलित थे। जब तुम लोग बड़े होकर साहित्य के बारे में जब पढ़ोगे तब अच्छी तरह समझ पाओगे। कामरूप में भी मौखिक साहित्य का ही सृजन पहले हुआ था। बाद में तेरहवीं सदी में कामरूपी भाषा में लिखित साहित्य की सृष्टि हुई थी। इस भाषा में सर्वप्रथम हेम सरस्वती ने प्रह्लाद चरित्र नामक एक खण्डकाव्य लिखा था। साथ–साथ माधव कन्दलि ने वाल्मीकि रामायण का कामरूपी भाषा में अनुवाद किया था। एक बात स्मरण योग्य है कि रामायण वाल्मीकि संस्कृत भाषा में लिखते थे। इसको सर्वप्रथम भारतीय भाषाओं के ''तमिल'' में अनुवाद हुआ था। उसके पश्चात प्राकृत भाषा में जैन रामायण लिखा गया था तथा कामरूपी, याने असमीया भाषा में अनुवाद हुआ था।

मनोरमा – दादाजी, हमारी हिन्दी भाषा में गोस्वामी तुलसीदास ने ''रामचरित मानस'' लिखा था

उसके पहले ही कामरूपी भाषा में रामायण लिखा गया था या बाद में?

दादाजी – बहुत अच्छी बात उठाई तुमने। गोस्वामी जी के करीब डेढ सौ वर्ष पहले माधव कन्दलि ने रामायण अनुवाद किया था। उसके पश्चात **कविरत्न–सरस्वती, रूद्र कन्दलि, हरिहर विप्र** और कई विशिष्ट कवियों ने कामरूपी भाषा में साहित्य का सृजन किया था। उसके बाद **श्रीहरिदेव , श्रीमंत शंकर देव, माधवदेव, श्री दामोदर देव, राम सरस्वती, वैकुण्ठनाथ भागवत् भट्टाचार्य (भट्टदेव) गोपाल मिश्र, पीताम्बर कवि, कंसारिकवि, रत्नाकर, कन्दलि, सार्वभौम भट्टाचार्य, मनकर, दुर्गाबर आदि प्रमुख थे।** उन कवियों ने भारतीय संस्कृत भाषा के ग्रंथों के आधार पर साहित्य का सृजन किया था। उनके साहित्य में पूर्णतः भारतीय धर्म और संस्कृति की ज्योति आज भी विद्यामान है। श्रीमंत शंकरदेव ने **नाट** या **नाटक** रचना कर कामरूपी भाषा में नाट्य रचना का श्रीगणेश किया, बाद में इस विषय पर हम चर्चा करेंगे।

उपर्युक्त कवि–साहित्यकारों में संत या भक्त कवि बहुत अधिक नहीं थे। उनमें श्री हरिदेव, श्रीमंतशंकरदेव, माधवदेव, संत कवि–साहित्यकारों में अग्रणी थे। उनकी जीवन गाथाओं के बारे में हम आगे चर्चा करेंगे। आज समय हो रहा है।

जय राम जी की...

तीनों– जय राम जी की...

● **ब्रह्मसत्रतैतेलिया**
(असम)

● विष्णुप्रसाद चौहान

चुटकुले

प्रथम के पिता (शिक्षक से) मेरा बेटा पढ़ाई में कैसा है?
शिक्षक - बस ये समझ लो कि आर्यभट्ट ने शून्य (०) की खोज इसी के लिए की थी।

****

शिक्षक- सिद्ध करो कि बाज की आँखें तेज होती हैं।
प्रदीप - क्योंकि वह चश्मा नहीं पहनता।

****

लड़की- आटा है?
दुकानदार - पतंजलि का है।
लड़की- मुझे आशीर्वाद चाहिए।
दुकानदार - सदा सुहागन रहो।

****

लड़की वाले- हमारी लड़की तो गाय है जी।
बाबूजी - मतलब इतनी शरीफ है?
लड़की वाले- नहीं मतलब! चरती रहती है दिनभर, कभी गोलगप्पे, कभी चाट, कभी पिज्जा।

****

एक बैंक में लिखा था कि 'अंगूठा लगाने के बाद अंगूठे पर लगी स्याही को दीवार पर न पोछों।'
किसी ने नीचे बड़ा अच्छा वाक्य लिख दिया कि 'अरे पागलो! ऊपर लिखी सूचना पढ़नी आती तो अंगूठा लगाते ही क्यों?'

****

गप्पू - मुझे लाल किला जाना है।
पप्पू- तो जा न भाई। ऐसे हर किसी को बताते बताते जाएगा तो पहुंचेगा कब?

****

अध्यापक (छात्रों से) जब-जब बिजली कड़कती है तो हमें पहले उसका चमकना दिखाई पड़ता है। और बाद में उसकी आवाज सुनाई पड़ती है, ऐसा क्यों होता है?
पिंकू- श्रीमान! इसलिए कि हमारी आँखें तो आगे की तरफ और कान पीछे की तरफ हैं।

शाला में गोलू

चित्रकथा - देवांशु वत्स

।। २१ फरवरी विश्व मातृभाषा दिवस ।।

राज्यादेश

नाटक : शंकरलाल माहेश्वरी

महामंत्री– महाराज की जय हो! विश्वपते! आपने इस तुच्छ को स्मरण किया? सेवक उपस्थित है, आज्ञा दीजिए।

सम्राट – महामंत्री जी! राज्य में सर्वत्र घोषणा करवा दी जाए कि राजधानी में जो भी बाहरी व्यक्ति आए, वह प्रवेश द्वार में प्रवेश से पूर्व मौन धारण कर सीधा राज मंदिर की सीढ़ियों पर माथा टेक कर ही अपनी मौन का त्याग करें, इससे पूर्व नहीं।

महामंत्री – जो आज्ञा महाराज!

(महामंत्री द्वारा घोषणा करवा दी गई। कुछ दिनों बाद ही एक भिक्षुक राजधानी के प्रवेश द्वार में गीत गाते हुए घुसने लगा तो उसे बंदी बना लिया गया।)

संतरी – भिक्षुक! शांत हो जाओ, मौन धारण कर लो, बंद करो अपना यह गीत। तुम राजा के आदेश की अवहेलना कर रहे हो।

भिक्षुक – कैसी अवहेलना! मैं भजन ही तो गा रहा हूँ।

संतरी – तुम्हें ज्ञात हैं न कि प्रवेश द्वारा में घुसने से पहले मौन अवस्था में राजमंदिर की सीढ़ियों पर माथा टेकना होगा। यह राजाज्ञा है।

भिक्षुक– इस आज्ञा का पालन मैं नहीं कर पाऊँगा क्योंकि राजा और मुझमें कोई अन्तर नहीं हैं। मैं भी किसी रूप में उनसे समानता रखता हूँ।

संतरी– तुम यह कहकर राजा का अपमान कर रहे हो। तुम्हें आदेश का पालन करना ही होगा।

(भिक्षुक गीत गाते हुए आगे बढ़ने लगा तो उसे बंदी बनाकर सम्राट के सामने प्रस्तुत किया गया।)

संतरी– महाराज की जय हो! राजन्! यह भिक्षुक अपने आपको आपके समकक्ष मानते हुए राज्यादेश की पालना नहीं कर रहा है।

सम्राट– भिक्षुक! यह क्या सुन रहा हूँ? भिखारी होकर मुझसे समता रखते हो? जानते हो, इसका परिणाम क्या हो सकता हैं?

भिक्षुक– जी हाँ, महाराज! मैं भलीभाँति जानता हूँ कि आप राज्य के स्वामी हैं, धन धान्य से परिपूर्ण है, आपके पास अपार सम्पदा है, नौकर चाकर है, सेना और सिपाही हैं और मुझे दण्डित कर सकते हैं। फिर भी मुझमें और आप में जो समानता है। इसे अन्य कोई नहीं जानता।

सम्राट – यह कैसे?

भिक्षुक – महाराज! आपका नाम भी एक सामासिक पद ही है। और मेरा भी वही पद है। अतः समानता हैं।

सम्राट – तुम फिर अवहेलना कर रहे हो। पहेलियाँ मत बुझाओ, स्पष्ट कहो।

भिक्षुक– महाराज! समासिक शब्द का अर्थ होता है ''छोटा रूप'' अतः जब दो या दो से अधिक शब्द (पद) अपने बीच की विभक्तियों का लोप कर जो छोटा रूप बनाते हैं उसे समास या सामासिक पद या सामासिक शब्द कहते हैं। राजन्! आपको लोग **'लोकनाथ'** कहते हैं और मुझे भी

'लोकनाथ' ही कहते हैं। अंतर केवल इतना ही है कि मैं बहुब्रीहि समास हूँ और आप तत्पुरुष समास हैं।

सम्राट – इसका अभिप्राय क्या है?

भिक्षुक – मैं बहुब्रीहि समास हूँ क्योंकि मेरे नाम में तीसरा पद प्रधान हे। लोक हैं नाथ जिसका अर्थात भिक्षुक (तीसरा पद) और आप तत्पुरुष समास हैं। लोक के नाथ अर्थात सम्राट। आपके नाम में विभक्ति का लोप हैं।''

बहुब्रीहि समास में–

कोई भी पद प्रधान नहीं होता।

प्रयुक्त पदों के सामान्य अर्थ की अपेक्षा अन्य अर्थ की प्रधानता रहती हैं।

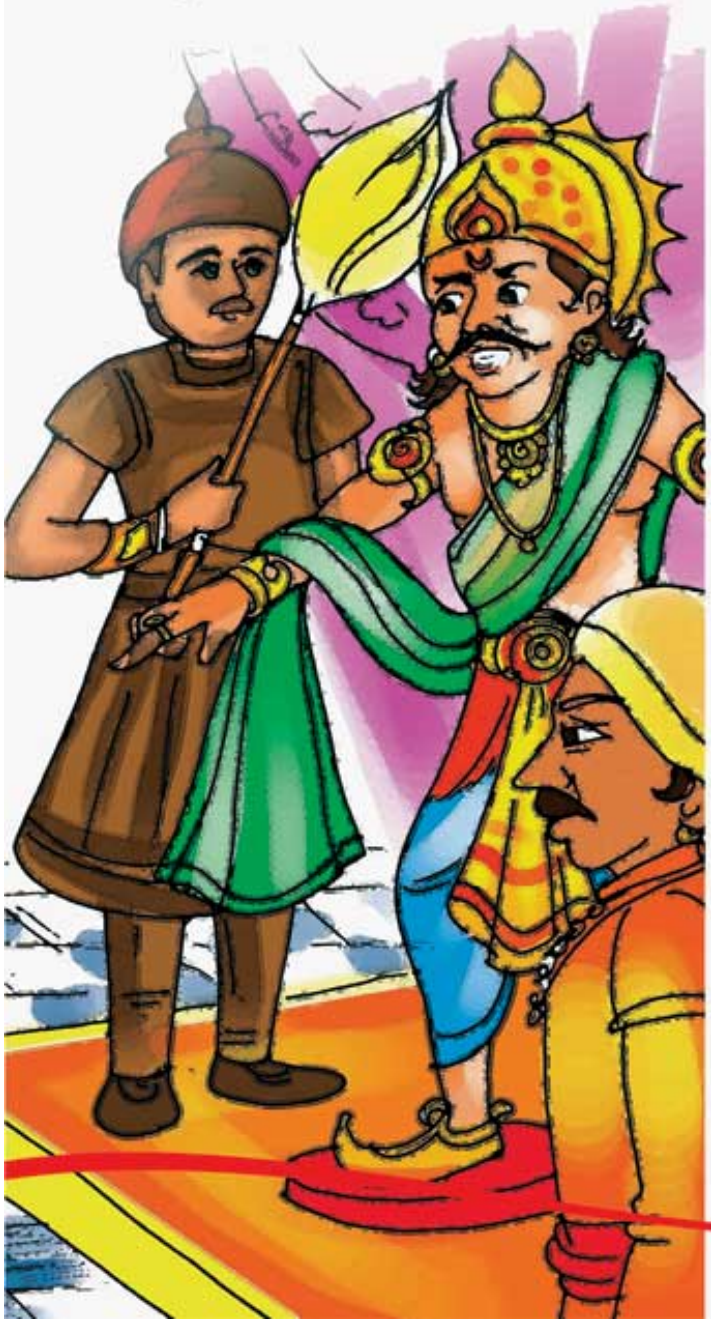

विग्रह करने पर वाला हैं जो जिसका, जिसकी जिसके वह आदि आते हैं।

जैसे – जलज, चन्द्रमुखी, महादेव, दशानन, चतुर्भुज, आशुतोष, घनश्याम।

इसी प्रकार **तत्पुरुष समास में–**

दूसरा पद (पर पद) प्रधान होता हैं अर्थात विभक्ति का लिंग, वचन दूसरे पद के अनुसार होता हैं।

इसका विग्रह करने पर कर्ता व संबोधन की विभक्तियों (ने, हे, ओ, अरे) के अतिरिक्त किसी भी कारक की विभक्ति प्रयुक्त होती है तथा विभक्तियों के अनुसार ही इसके उपभेद होते हैं। जैसे– विद्यालय, ऋणमुक्त, राजमाता, वनवास, प्रेमसागर, मार्गभ्रष्ट, जेब कतरा, विद्यालय, गुरु दक्षिणा, मंत्रिपरिषद्, राजमाता, घुड़सवार, रसोईघर, कामचोर।

सम्राट – महामंत्री जी! आप हिन्दी व्याकरण के प्रकाण्ड विद्वान हैं। क्या भिक्षुक द्वारा प्रस्तुत विश्लेषण उपयुक्त हैं?

महामंत्री– जी महाराज! भिक्षुक द्वारा प्रस्तुत विवेचन व्याकरण की भाषा में सही हैं।

सम्राट– भिक्षुक भैया! तुम जैसे विद्वान को भला–बुरा कहकर हमने जो अपमान किया हैं इसके लिए क्षमा चाहता हूँ। नामों की समानता के साथ ही हमारा भाई–भाई का अटूट संबंध बन गया है।

महामंत्री– महाराज! आपने भला बुरा और भाई–भाई शब्दों के प्रयोग से एक और समास को उजागर किया है। यह हैं **द्वन्द्व समास।**

इसमें दोनों पद प्रधान होते हैं।

दोनों पद एक दूसरे के विलोम होते है। (सदैव नहीं)

इसका विग्रह करने पर ''और अथवा या'' का प्रयोग होता हैं। जैसे जलवायु, भलाबुरा, धर्माधर्म, गायबैल, मातापिता।

(इसी समय सम्राट का ज्येष्ट पुत्र नीलकण्ठ आ जाता हैं। वह सभी का अभिवादन कर आज्ञा पूर्वक आसन ग्रहण करता है।)

भिक्षुक– महामंत्री जी! यह सुन्दर राजकुमार कौन है तथा हिन्दी के किस शब्द या शब्द समूह को सुशोभित करता है।

महामंत्री – यह राजकुमार महाराजश्री का ज्येष्ठ पुत्र हैं। इसका शुभ नाम नीलकण्ठ है। घर वालके इन्हें कुलदीपक भी कहते हैं।

भिक्षुक – क्या खूब! **कर्मधारय समास** का भी हार्दिक स्वागत हे। नीलकण्ठ शब्द का प्रथम पद नील विशेषण हैं तथा कण्ठ विशेष्य हैं अतः कर्मधारय समास हैं।

कर्मधारय समास में–

एक पद विशेषण होता हैं तो दूसरा पद विशेष्य

कहीं कहीं उपमेय उपमान का संबंध होता है, तथा विग्रह करने पर रूपी शब्द प्रयुक्त होता हैं।

जैसे – मंद बुद्धि, दुष्कर्म, पीताम्बर, नीलकमल, मृगनयन, चरण कमल, विद्याधन, महापुरुष।

सम्राट – भिक्षुक भाई! तुम्हारे व्याकरण ज्ञान ने तो मुझे बहुत प्रभावित किया है।

भिक्षुक– राजन! मेरी एक सलाह हैं। राजकाज को सुचारु रूप से चलाने के लिए पंचपात्रों की एक समिति का गठन किया जाना चाहिए।

महामंत्री – भिक्षुक भाई! पांचपात्रों की बात करके तो आपने द्विगु समास को भी हमारा सहयोगी बना लिया हैं। क्योंकि इसमें प्रायः पूर्व पद संख्या वाचक होता है, जो किसी समूह का बोध भी कराता है।

पंचचात्र शब्द इसी अर्थ में हैं। महाराज!

द्विगु समास में–

पूर्व पद संख्या वाचक होता हैं। कभी–कभी पर पद भी संख्या वाचक देखा जाता हैं।

इस समास में प्रयुक्त संख्या किसी समूह का बोध कराती हैं अन्य अर्थ का नहीं।

इसका विग्रह करने पर समूह या समाहार शब्द प्रयुक्त होता है। जैसे– त्रिभुवन, चौराहा, पंचवटी, दशक, शतक, पंचामृत।

सम्राट – महामंत्री! तुम्हारी यह व्याकरण की भाषा तो मेरी समझ से बाहर हैं।

महामंत्री – राजन! यदि पंचपात्रों के यथा समय परामर्श व सहयोग से यथाविधि और यथाशक्ति कार्य करने का प्रयास होगा तभी राज्य का विकास होगा जो कि राज हित में आवश्यक है। यह राजधर्म के भी अनुकूल है।

भिक्षुक– आपके कथन में यथाशक्ति, यथावसर और यथाविधि का प्रयोग हुआ है जो अव्ययीभाव समास से संबंद्ध है।

अव्ययीभाव समास में–

पहला पद प्रधान होता हैं।

प्रथम पद या पूरा पद अव्यव होता हैं (वे शब्द जो लिंग, वचन, कारक, व काल के अनुसार नहीं बदलते उन्हें अव्यव कहते हैं।)

यदि एक शब्द की पुनरावृत्ति हो और दोनों शब्द मिलकर अव्यय की तरह प्रयुक्त हो जहाँ भी अव्ययी भाव समास होता हैं।

संस्कृत में उपसर्ग युक्त पद भी अव्ययीभाव समास होता हैं। जैसे– प्रतिदिन, आजन्म, निडर, आमरण, निर्विवाद, रातोंरात।

महामंत्री – महाराज! आज का दिन हमारे लिए बड़ा ही महत्वपूर्ण हैं। भिक्षुक भाई ने हमें अपने व्याकरण ज्ञान से लाभान्वित किया हैं साथ ही राजकाज की योजना में भी सहयोग किया हैं अतः इस दिन को चिरस्मरणीय बनाने के लिए आप द्वारा राजहित में शुभ संकल्प लेना चाहिए।

सम्राट – यह बड़ा ही श्रेष्ठ विचार हैं। मेरा यह संकल्प लिखित रूप में भी पूरे राज्य में प्रसारित कर दिया जाए महामंत्री जी।

महामंत्री– जी महाराज, मैं शीघ्र ही संकल्प पत्र तेयार कर सेवा में प्रस्तुत कर दूँगा।

(संकल्प पत्र पंचपात्रों के सहयोग से तैयार किया गया।)

महामंत्री – विश्वपते! आपकी आज्ञा से संकल्प– पत्र तैयार कर लिया गया है। जो इस प्रकार हैं।

संकल्प पत्र

मैं सम्राट राजवीर सिंह भगवान चतुर्भुज को साक्षी रखकर अपने माता पिता के श्रीचरणों में नतमस्तक होकर

राजहित में यह घोषणा करता हूं कि अपनी विलक्षण प्रतिभा का सदुपयोग करते हुए पंचपात्रों की लोकप्रिय समिति के समस्त सदस्यों को पंच परमेश्वर के रूप में स्वीकारते हुए उनके द्वारा प्रतिपादित कार्य योजनाओं को शांत चित्त होकर ऊँच नीच भावनाओं से ऊपर उठाकर धर्माधर्म का विचार करते हुए जरूरतमंद नागरिकों की सहायता करुंगा।

अपने राज्य को भ्रष्टाचार मुक्त करते हुए महिला उत्पीड़न पर्यावरण संरक्षण जनसंख्या नियंत्रण, सर्वशिक्षा, नारी चेतना, गरीबी उन्मूलन और मंहगाई पर नियंत्रण करने का प्रयास करुंगा। साथ ही प्राकृतिक सम्पदाओं की सुरक्षा तथा उनका जन हित में उपयोग करने का संकल्प लेता हूँ। परमात्मा मुझे राष्ट्र हित के लिए शक्ति प्रदान करें।

भिक्षुक – महाराज! आपके इस शुभ संकल्प से देशवासी अभिभूत व धन्य होंगे।

सम्राट– बेटा, नीलकण्ठ! तुम भी संस्कृत विद्यापीठ के होनहार प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थी हो। साथ ही महामंत्री जी और भिक्षुक भाई की चर्चाओं से व्याकरण का अभूतपूर्व ज्ञान अर्जित किया हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम सीखे हुए ज्ञान से यह पता लगा सको कि मेरे संकल्प पत्र में कौन कौनसे शब्द किस समास से संबंधित हैं। उन्हें श्रेणीबद्ध किया जाए और उनकी शुद्धता की परख की जाए। ताकि लिखित दस्तावेज में किसी भी प्रकार की व्याकरणिक अशुद्धि नहीं रहे।

नीलकण्ठ – आपकी आज्ञा की पालना अवश्य होगी पिताश्री।

महामंत्री – महाराज! भिक्षुक भाई प्रस्थान की आज्ञा चाहते हैं।

सम्राट – महामंत्री! ऐसे उद्भट विद्वान भिक्षुक भाई को स्वर्ण मुद्राओं से पुरस्कृत कर सम्मानपूर्वक विदा किया जाए।

॥ लधुकथा ॥

गुलदाऊदी

कहानी : मीरा जैन

ठंड का मौसम गुलदाऊदी के फूलों की खूबसूरती अपने चरम पर थी जो कोई भी उन्हें निहारता बस निहारता ही रह ताजा और उनकी सुन्दरता की प्रशंसा किये बिना नहीं रहता अपने अस्तित्व व रूप पर अहंकार से इठलाते गुलदाऊदी के फूल बगीचे के अन्य पौधों को बड़ी हेय दृष्टि से देखते और स्वयं पर नाज करते हुए सोचते– ''वे कहाँ और हम कहा।'' आस–पास के पौधे उन्हें समझाते लेकिन वे यह सोच कर उनकी बात नहीं मानते किये सब हमसे ईर्ष्या रखते हैं।

आज बगीचे से लगे मकान में नए किरायेदार रहने को आए थे। वे भी गुलदाऊदी के रंग–रूप को देखकर अभिभूत हो गए साथ ही उनकी प्रशंसा के पुल बांध दिए अब तो गुलदाऊदी के फूलों की पौ बारह थी उन्हें लगने लगा कि इस वनस्पति जगत में उनका कोई दूसरा सानी नहीं है लेकिन शाम को उस समय उनके होश उड़ गए जब देखा कि गृहस्वामिनी के हाथों में थाल और उसमें जलता हुआ दीपक व पूजन सामग्री उनके चरणों में चढ़ने के बजाय पास के सामान्य से दिखने वाले पौधे पर समर्पित हो गई उसकी पूजा आरती कर जलता दीपक उसके चरणों में रख दिया इतना ही नहीं वहाँ की मिट्टी ऊँची–नीची होने के कारण गृहस्वामिनी के प्रयास के बावजूद दीपक बार–बार टेड़ा हो रहा था। अतः एक ओर टेका लगाने के लिए गृहस्वामिनी ने बिना किसी सोच विचार के बड़े आराम से एक गुलदाऊदी का फूल तोड़ा और उसे दीपक के नीचे लगा दिया अपनी यह दशा देख गुलदाऊदी को बेहद दुःख हुआ उसे आज अनुभव हो गया कि पूजा हमेशा गुणों की होती है रूप की नहीं क्योंकि वह पौधा तुलसी का था।

● उज्जैन (म.प्र.)

।। बाल प्रस्तुति ।।

सौ ऊँट

कहानी : विशाल लववंशी

एक आदमी राजस्थान के किसी शहर में रहता था। वह स्नातक था और एक निजी संस्था में काम करता था।

पर वो अपनी जिंदगी से खुश नहीं था। हर समय वह किसी न किसी समस्या से परेशान रहता था और उसी के बारे में सोचता रहता था।

एक बार शहर से कुछ दूरी पर एक महात्मा का दल रुका हुआ था।

शहर में चारों और उन्हीं की चर्चा थी।

बहुत से लोग अपनी समस्याएँ लेकर उनके पास पहुँचने लगे।

उस आदमी को भी इस बारे में पता चला और उसने भी महात्मा के दर्शन करने का निश्चय किया। छुट्टी के दिन सुबह–सुबह ही उनके दल तक पहुँचा।

वहाँ सैकड़ों लोगों की भीड़ जुटी हुई थी, बहुत

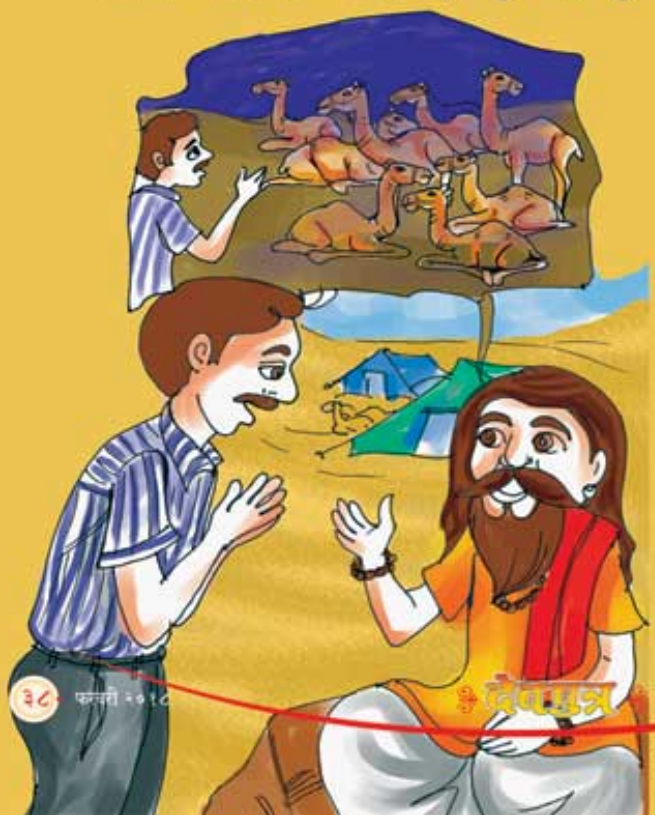

प्रतीक्षा के बाद उसका क्रम आया। वह बाबा से बोला– ''बाबा में अपने जीवन में बहुत दुखी हूँ, हर समय समस्याएँ मुझे घेरी रहती है, तो कभी कार्यालय में विवाद तो कभी घर पर अनबन को लेकर परेशान रहता हूँ। बाबा कोई ऐसा उपाय बताए कि मेरे जीवन में सभी समस्याएँ समाप्त हो जाएँ और मैं चेन से जीवन व्यतीत कर सकूँ।

बाबा मुस्कुराए और बोले– ''बालक, आज बहुत देर हो गयी है मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर कल सुबह दूंगा। लेकिन क्या तुम मेरा एक छोटा–सा काम करोगे?''

''जरूर करूँगा'' आदमी उत्साह के साथ बोला।

''देखो बेटा, हमारे दल में सौ ऊँट हैं, और इनकी देखभाल करने वाला आज बीमार पड़ गया है मैं चाहता हूँ कि आज रात तुम इनका ख्याल रखो। और जब सौ के सौ ऊंट बैठ जाएं तो तुम भी सो जाना।''

ऐसा कहते हुए महात्मा अपने तम्बू में चले गए... अगली सुबह महात्मा उस आदमी से मिले और पूछा, ''कहो बेटा नींद अच्छी आई।''

''कहाँ बाबा, मैं तो एक पल भी नहीं सो पाया। मैंने बहुत प्रयास किया पर मैं भी ऊँटों को नहीं बैठा पाया कोई न कोई ऊंट खड़ा हो ही जाता...।'' वह दुखी होते हुए बोला।

''मैं जानता था यही होगा... आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ है कि ये सारे ऊंट एक साथ बैठ जाएं।'' बाबा बोले।

आदमी नाराजगी के स्वर में बोला, '' तो फिर आपने मुझे ऐसा करने का क्यों कहा।''

बाबा बोले, बेटा, कल रात तुमने क्या अनुभव किया। यही न कि चाहे कितने भी प्रयास कर लो सारे ऊंट एक साथ नहीं बैठ सकते। तुम एक को बैठाओगे तो कहीं और दूसरा खड़ा हो जाएगा। इसी तरह तुम एक समस्या का समाधान करोगे तो किसी कारणवश दूसरी खड़ी हो जाएगी। जब तक जीवन है ये समस्या तो बनी रहती हैं कभी कम तो कभी ज्यादा। इन समस्याओं के बावजूद जीवन का आनंद लेना सीखो...।

कल रात क्या हुआ, कई ऊँट रात होते–होते खुद ही बैठ गए कई तुमने अपने प्रयास से बैठा दिए पर बहुत से ऊँट तुम्हारे प्रयास के बाद भी नहीं बैठे... और जब बाद में तुमने देखा तो पाया कि तुम्हारे जाने के बाद उनमें से कुछ खुद ही बैठ गए कुछ समझे...।

समस्याएँ भी ऐसी ही होती है कुछ तो अपने आप ही खत्म हो जाती है, कुछ तो तुम अपने प्रयास से हल कर लेते हो और कुछ तुम्हारे कोशिश करने पर भी हल नहीं होती, समस्याओं को समय पर छोड़ दो...

उचित समय पर वे खुद ही खत्म हो जाती है।

और जैसा कि मैंने पहले कहा...जीवन है तो कुछ समस्याएँ रहेगी...पर इसका ये मतलब नहीं कि तुम दिन–रात उन्हीं के बारे में सोचते रहो... ऐसा होता तो ऊँटों की देखभाल करने वाला कभी सो नहीं पाता। समस्याओं को एक तरफ रखो और जीवन का आनंद लो चैन की नींद सो जाओ।

जब उनका समय आएगा वो खुद ही हल हो जाएगी।

● **कालापीपल मण्डी (म.प्र.)**

ललकारा शेर को

लघुकहानी : **मनोहर चमोली 'मनु'**

एक जंगल में शेर दहाड़ा। सारा जंगल कांप उठा। जानवर भागने लगे। शेर ने दहाड़ते हुए कहा– ''ठहरो! नहीं तो मैं तुम्हें खा जाऊँगा।''

एक हिरन चिल्लाया– ''भागो!'' सारे जानवर भागने लगे। वह भागते–भागते थक गए।

दूसरे हिरन ने पूछा– ''ऐसे कब तक भागते रहेंगे? वैसे जाए तो जाएँ कहाँ?''

सब रुक गए। फिर सोचने लगे। गाय, बकरी, हिरण, भेड़, खरगोश, घोड़ा और गधा उदास हो गए।

एक चींटी ने पूछा– ''क्यों भाई! कहाँ से आ रहे हो और कहाँ जाओगे?''

खरगोश ने चींटी को सारा हाल सुनाया। सारा किस्सा सुनकर चींटी गुस्से में बोली– ''ये क्या बात हुई। शेर है तो क्या हुआ। ऐसे ही मनमानी करेगा। मेरे साथ चलो। हम सब शेरे से लड़गे। उससे मिल–जुल कर निपटेंगे।''

सब हैरान होकर चुपचाप चींटी के पीछे चलने लगे। देखते ही देखते चींटी के सामने चींटियों का विशालकाय दल उमड़ पड़ता है। फिर मकड़ियाँ भी शामिल हो जाती हैं। सैकड़ों चूहे भी झुण्ड में शामिल हो जाते हैं। चींटियों, मकड़ियों और चूहों का विशालकाय झुण्ड पर्वत को ढक लेता है।

बर्र–बर्र करती सैकड़ों मुधमक्खियों का दल भी झुण्ड के पीछे–पीछे चलने लगता है। मधुमक्खियों के झुण्ड से आसमान काला हो जाता है। तभी बिच्छुओं का एक विशालकाय दल भी भी झुण्ड में शामिल हो जाता है। फिर हजारों कौए और अनगिनत चमगादड़ भी झुण्ड में चल पड़ते हैं। सरसर, फरफर, हुआं–हुआं, हिस्स–हिस्स की आवाजों से धरती हिलने लगती है।

अब इन जीव–जन्तुओं के विशाल झुण्ड में सियार, कुत्ते और हाथी भी शामिल हो जाते हैं।

जीव–जन्तुओं का काफिला शेर की मांद की ओर बढ़ने लगता है।

मांद के पास जाकर सब शेर को ललकारते हैं। शेर शोर सुनकर माँद से बाहर निकलता है। अपनी ओर आ रहे विशालकाय झुण्ड को देखकर दुम दबाकर भाग जाता है। सभी पशु–पक्षी तालियाँ बजाते है। नाचने–गाने लगते हैं।

● **भिंताई (उत्तराखण्ड)**

खेल का समय

● चाँद मोहम्मद घोसी

१

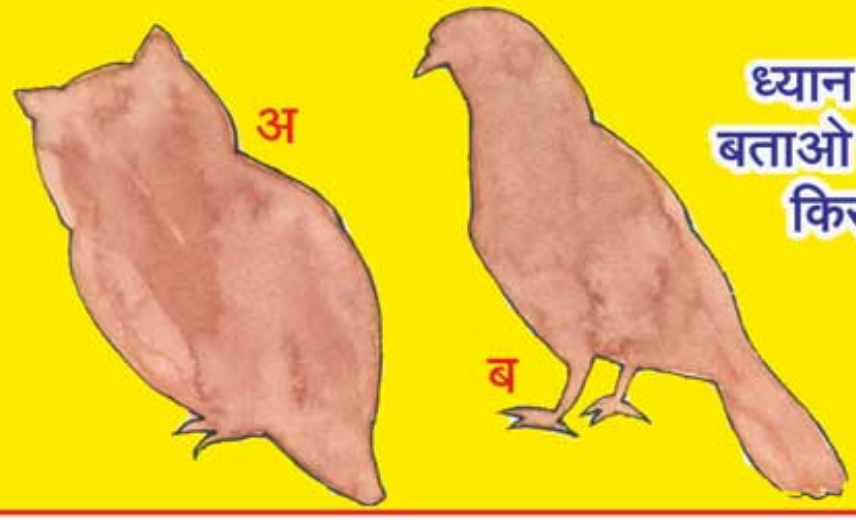

ध्यान से देखकर बताओ ये परछाइयां किसकी है?

२

बिना कलम उठाये एक ही रेखा से मछली, बकरी व हिरण का चित्र बनाना सीखिए।

यात्राकथा सितार की

जानकारी : दीपांशु जैन

आज से कोई सात सौ साल पहले, भारत में एक व्यक्ति थे, जो विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। उनका नाम था, अमीर खुसरो। वे फारसीऔर हिन्दी के जाने–माने कवि तो थे ही, संगीतज्ञ भी गजब के थे। उन्होंने तीन तारवाला एक नया बाजा चलाया और नाम रखा, 'सेह–तार'। कहते हैं कि वहीं 'सेह–तार' आगे चलकर सितार बन गया। यों, हमारे यहाँ पहले एक वीणा थी। 'त्रितंत्री वीणा'। इसमें भी तीन ही तार होते थे। हो सकता है सितार, उसी वीणा का बदला रूप हो। सितार, वीणा से काफी मिलता–जुलता भी है। हाँ, आजकल सितार में तीन नहीं सात तार होते हैं।

शक्ल–सूरत में वीणा, चाहे सरस्वती वीणा हो या विचित्र वीणा अथवा दक्षिणी संगीत का गोटुवाद्यम्, सभी सितार की तरह ही होती हैं। अंतर और बातों में होता है।

सितार के दो मुख्य अंग हैं, एक नीचे सूखी लौकी का खोखला तूंबा और दूसरा, उसके ऊपर जुड़ी लकड़ी का लंबी डंडी।

तूंबे के तह से उभरते और उसके ऊपर बने सेतु पर होते हुए सातों तार डंडी के दोनों ओर गड़ी खूंटियों से तने रहते हैं। कुछ तार लोहे के और कुछ पीतल के होते हैं। पहला 'बाज' का तार कहलाता है। पूरी डंडी में तांत से पर्दे बंधे होते हैं। राग के अनुसार, ये पर्दे ऊपर नीचे खिसकाये भी जा सकते हैं। खूंटियों को ऐंठ कर तारों को सुर में मिलाया जाता है।

कुछ बड़े सितारों में इन तारों के नीचे भी तार बिछे होते हैं। इन्हें तरबदार सितार कहते हैं। अकसर ऐसे सितारों में ऊपर की ओर भी एक छोटा सा तूंबा लगा होता है। तरब और तूंबे से बजाते समय एक अनुगूंज पैदा होती है। यह सितारवादन को और प्रभावकारी बना देती है।

सितारवादक, दाहिने हाथ की तर्जनी में तार की

एक अंगूठी जैसी चीज पहनता है, इसे मिजराब कहते हैं। वह मिजराब से 'बाज' के तार पर आघात करता हुआ, बायें हाथ की तर्जनी अथवा माध्यमा से बाज के तार को विभिन्न पदों पर दबाता चलता है और सरगम निकलती चलती है। इन्हें स्वरों के संयोग से वह पहले आलाप बजा कर राग की बढ़त करता है और फिर धुन बजाता है।

इस धुन को गत कहते हैं। यह दो तरह की होती है। एक धीमी चालवाली मसीतखानी और दूसरी तेज चालवाली रजाखानी। गत के बीज में वह दोगुनी–चौगुनी लय यानी चाल में तरह–तरह तोड़े बजाता है।

अंत में जब चाल बहुत तेज हो जाती है। तो स्वर और लय का चमत्कार दिखाने के लिए सितारवादक झाला बजाता है। सितार में अपने तीन बोल होते है। दा, रा और दिर। इन्हीं बोलों से ये आलाप, गत, तोड़े और झाले बजाये जाते हैं।

सही उत्तर

एक बात और सितार सोलो यानी अकेले बजता है। संगत के लिए उतना उपयुक्त नहीं। गायकी और तंत्रकारी की अपनी अलग–अलग विशेषताएँ हैं। अतः शास्त्रीय संगीत में दोनों का एक साथ मेल नहीं बैठता। हाँ, लोक तथा सुगम संगीत तथा फिल्म संगीत के लिए सितार का खुलकर प्रयोग होता है। सितार की झंकार, उसकी मनोहारी आवाज तथा दूसरी बातों हलके–फुलके गानों को कहीं ज्यादा मनोरंजक बना देती है।

पिछले कुछ समय से पश्चिम के देशों यूरोप और अमरीका में सितार की मांग लगातार बढ़ती जा रही है। पं. रविशंकर ने देश–विदेश में सितार को लोकप्रिय बनाने में बड़ा महत्वपूर्ण योग दिया है। भारत में आज एक से एक, जाने–माने सितारवादक हैं, तभी तो आज यह भारत का ही नहीं दुनिया का एक प्रमुख वाद्य बन गया है।

बड़ा छोटा

१०
७
१
३
५
६
४
८
२
९

।। संस्कृति प्रश्नमाला ।।

(१) श्रीराम लक्ष्मण ने (२) जयद्रथ (३) फिलीपिन्स (४) कर्नाटक (५) प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (६) बाजी प्रभुदेशपाण्डे (७) लीलावती (८) कोकेन (९) स्टवी वॉ (१०) महाराज चूड़ामन

अंतर बताओ

(१) पृथ्वी की आँखें आधी खुली हैं। (२) राकेट के पास एक तारा गायब है। (३) उसके आगे का तारा हँस नहीं रहा (४) राकेट के पास वाला ग्रह छोटा है। (५) बड़ी लड़की की चोटी में अंतर है। (६) छोटी लड़की की नाक (७) बाजू वाले गृह का एक दांत कम है। (८) इसी ग्रह की आँख पूरी नहीं है।

बताओ तो जानें

२३ ईंटें

खेल का समय

उल्लू, कबूतर

तीन नन्ही कविताएँ

कविता : अशोक जैन

झर-झर, झर-झर गाता झरना
कहीं दूर से आता झरना।
हंसे हसाये, देखो कैसी
कलाबाजियां खाता झरना।

धरती के है तारे जुगनू
हैं ना कितने प्यारे जुगनू
लो, इनको हाथों में ले लो
अब बन गए तुम्हारे जुगनू।

फूलों की ये सहेली हैं,
डाल-डाल पर खेली हैं,
जोड़े पंख नमस्ते में
भौंराजी की चेली हैं।

• भवानीमंडी (राज.)

पुस्तक परिचय

फूल खिले हैं सरसों के – पं. नन्दकिशोर 'निर्झर' की सरस, सुहानी शैली में प्रस्तुत ५३ बाल कविताएँ जो बच्चों के आसपास के परिवेश में चुने गए हैं।
प्रकाशन – बोधिप्रकाशन, एफ–७७, सेक्टर–९, रोड़ नं. ११, करतापुर इण्डस्ट्रियल एरिया, बाईस गोदाम, जयपुर २०२००६ (राज.)

बालमन की किलकारी – डॉ. मेजर शक्तिराज की सरलता, रोचकता और विविध विषयों का मनोहर चित्र प्रस्तुत करती ७५ बाल कविताएँ।
प्रकाशन – अमृत बुक्स, अक्षरधाम, गुरुतेगबहादुर कॉलोनी, कैथल १३६०२७ (हरि.)

बढ़े चलो – खेलना प्रसाद कैवर्त 'अभिनव' द्वारा रचित बच्चों के मनभाते विषयों पर रसभरी ६१ कविताएँ प्रस्तुत करती पुस्तक।
प्रकाशन – शरारे प्रकाशन, बी–बी/६ बी, जनकपुरी, नई दिल्ली ११००५८

रंगमंच के नन्हे तारे– प्रतिमा अखिलेश द्वारा रचित मंच पर अभिनय योग्य हँसाते–गुदगुदाते हुए सीख दे जाते है ८ बाल नाटक।
प्रकाशन – पाथेय प्रकाशन, डॉ. हर्षकुमार तिवारी, ११२, सराफा वार्ड जबलपुर (म.प्र.)

स्वर्ग की अदालत – डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा लिखित चार बाल एकांकी और नुक्कड़ नाटक जो बच्चों का नैतिक आचरण एवं अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान खींचते हैं।
प्रकाशन – आशा प्रकाशन, ८/१४४, आर्य नगर, कानपुर, २०८००२ (उ.प्र.)

राजस्थानी बाल कथाएँ – सावित्री चौधरी द्वारा सरल एवं सुमधुर राजस्थानी बोली में मनोरजंजन और बोधकता से भरी नौ बालकथाएँ।
प्रकाशन – कल्पना पब्लिकेशन दु. नं. १५७, दूसरी मंजिल, चांदपोल बाजार, जयपुर (राज.)

शहर का राजा जंगल का राजा

कहानी : हूँदराज बलवाणी

एक दिन शेरसिंह जंगल से दूर शहर की ओर जा पहुंचा। उसने दूर से देखा कि शहर के लोग एक शाही रास्ते के दोनों ओर इकट्ठे हो गए हैं। शेरसिंह के मन में हुआ कि इतने सारे लोग इकट्ठे क्यों हो गए हैं और किसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। शेरसिंह झाड़ियों के पीछे छुपकर देखने लगा।

कुछ ही समय में शहर का राजा हाथी पर सवार होकर अपने मंत्रियों और सेवकों के साथ वहां आ पहुंचा। लोगों ने नोर लगाए– ''महाराज की जय हो। हमारा राजा अमर रहे।''

यह नारे देर तक गूंजते रहे और राजा की शाही सवारी आगे बढ़ गई।

शेरसिंह छुप–छुपकर यह सब देख रहा था। वह सोचने लगा, इस राजा का पूरे शहर में इतना दबदबा है। दूसरी ओर मैं हूँ कि जंगल का राजा होकर भी सारा जंगल भटकता रहता हूँ। मेरे पास तो न हैं नौकर–चाकर, न सवारी का साधन, न महल और न खजाना।

याह सोचते–सोचते शेरसिंह वापस जंगल में आया। आते ही उसने जोर से दहाड़ लगाई। जंगल के छोटे–बड़े जानवर डर गए। कहने लगे, '' ऐसे तो कभी शेरसिंह को दहाड़ते नहीं देखा। तो आज उसे क्या हो गया है?''

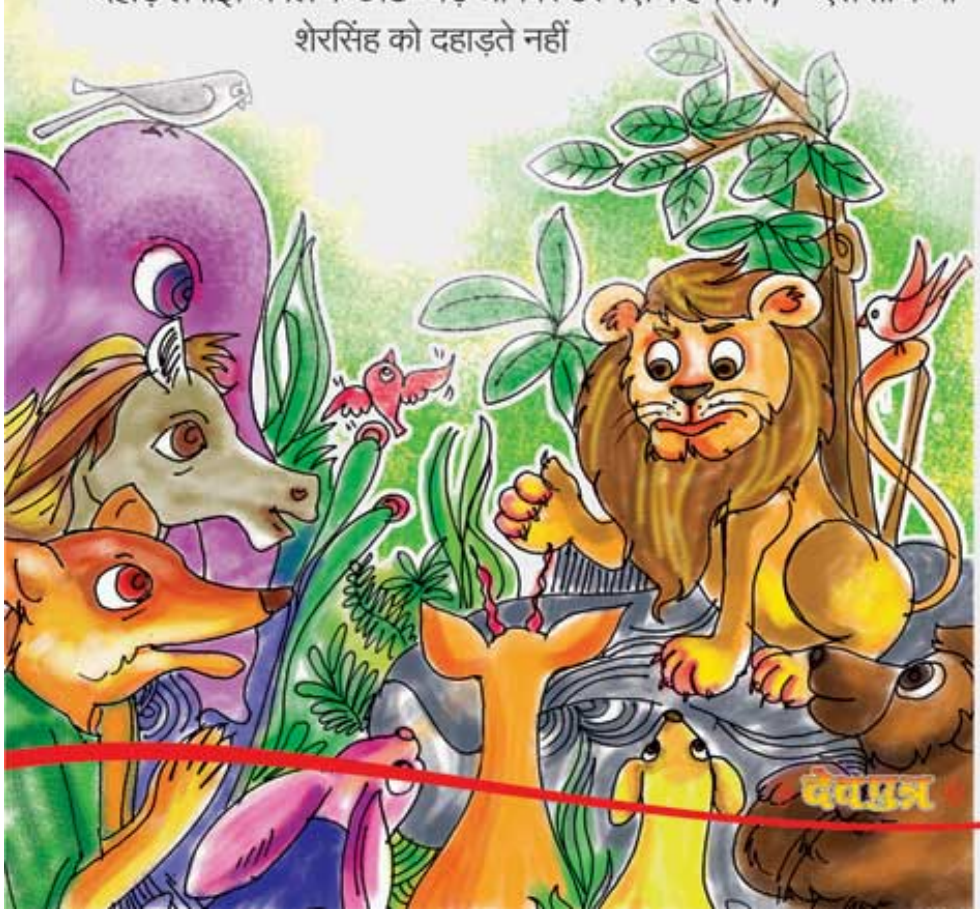

सब जानवर शेरसिंह की गुफा की ओर दौड़ते आए। देखा तो शेर सिंह लाल–पीला होकर गुफा के बाहर खड़ा था।

''लानत है तुम सब जानवरों को।'' शेरसिंह गुस्से में गुर्राया, ''एक वह राज है जिसे सारा संसार मानो पूजता है, एक मैं राजा हूँ जो तुम मूर्खों के आगे जंगल की ठोकरें खा रहा हूँ।

सभी एक दूसरे का मुँह देखने लगे। वे समझ नहीं पाये कि शेरसिंह किसकी बात कर रहा है।

लाली लूमड़ी ने हिम्मत करके पूछा, ''महाराज! आप किस राजा की बात कर रहे हैं?''

''शहर के राजा की, और किसकी?'' शेरसिंह चिल्लाकार बोला। ''उस राजा का दबदबा तो देखो। उसकी शान तो देखो। उसके आगे नौकरों, सेवकों और मंत्रियों की फौज लगी हुई थी। वे महाराजा की जय–जयकार मैं लगे हुए थे। और उसके आगे सिर झुका रहे थे। वह राजा एक भव्य महल में रहता है। मैं भी तो तुम्हारा राजा हूँ। कहाँ है मेरे पास यह सब कुछ?''

अब सब को समझ में आया कि आखिर बात क्या है? सभी को लगा कि शेरसिंह शहर के किसी राजा की शान देख आया है। काफी देर तक तो किसी की भी हिम्मत

नहीं हुई कि शेरसिंह से कुछ कहे। उस समय घामन घोड़े ने धीरज से कहा, ''महाराज! आप भी तो उस राजा की तरह हमारे राजा हैं। हम आपकी प्रजा हैं। अगर आप चाहेंगे कि शहर के राजा की तरह आपका भी भव्य महल हो तो वह बिना विलंब बन जाएगा। नौकर-चाकर भी आप हम हजारों में से जितने चाहिए रख सकते हैं। अगर अनुमति दें तो आज से ही आपकी जय-जयकार से जंगल को इस तरह गूंजा दें कि शहर का राजा भी दौड़ता आए।''

घामन घोड़े की बात से शेरसिंह का गुस्सा थोड़ा कम हुआ।

अवसर देखकर लाली लोमड़ी ने कहा-''महाराज, आपके राज्य में इतनी प्रकृतिक संपत्ति है, जिसके लिए शहर के लोग तरसते रहते हैं। इतनी अमूल्य संपति शहर के किसी राजा के पास नहीं है।''

शेर सिंह अब शांत खड़ा था।

तब लाली लोमड़ी ने बात आगे बढ़ाई। '' शहर के राजा के पास आज जो है वह कल नहीं भी हो सकता है। दूसरा कोई शक्तिशाली राजा उस पर आक्रमण करके उससे वह सब छीन सकता है। आप का राज्य तो आपसे छीन सके ऐसा कोई पैदा ही नहीं हुआ। तो फिर बताइए, सच्चा राजा कौन आप या वह शहर का राजा?''

शेरसिंह का गुस्सा यह सब सुनकर उतर चुका था।

उस समय सभी जानवरों ने जोर-जोर से नारे लगाए, ''हमारे राज की जय! शेरसिंह की जय।''

शेरसिंह के चेहरे पर अब गर्व भी दिखाई दे रहा था तो मुस्कान भी।

● **अहमदाबाद (गुजरात)**

आपकी वार्ता

नवम्बर अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद बच्चों में सुसंस्कार के बीच डालने में आपकी देव स्वरूप पत्रिका की भूमिका सराहनीय, प्रशंसनीय, वन्दनीय, अनुकरणीय है। स्थानीय आदर्श विद्या मंदिर में जब भी बच्चों से समय प्रबंधन, चरित्र, अनुशासन, संस्कार, नैतिक मूल्यों पर वार्त्तालाप करने का मौका मिलता है तब आपकी पत्रिका स्वतः ही स्मरण हो जाती है।

जीवन संध्या में स्थानीय गायत्री केन्द्र में प्रति रविवार बाल संस्कार शाला में भी बच्चों को देवपुत्र पत्रिका पढ़ने हेतु प्रोत्साहित करता रहता हूँ।

- दिलीप भाटिया, रावतभाटा (राज.)

****

देवपुत्र का नवम्बर अंक मिल गया तो उसे पढ़ते ही मन सुमन सा खिल गया। आज स्वच्छता अभियान की सफलता की गति विशेष प्रगति पर है। आपने अपनी बात के अंतर्गत यह स्पष्ट किया है कि सोशल मीडिया में बच्चों, बड़ों-बड़ों को भी स्वच्छता का पाठ सिखाते हुए दिखाई देते हैं। स्वच्छ रहना स्वस्थ रहना है।

बाल प्रस्तुति के साथ अन्य स्तंभ पत्रिका की लोकप्रियता हेतु किसी सेतु समान हैं। रचनाओं का चयन बहुत ही प्रशंसनीय है। मुख पृष्ठ पर हंसती हुई होनहार पीढी का चित्र बाल दिवस के उपलक्ष्य में प्रासंगिता को मुखर करता है। साज सज्जा, पठनीयता के प्रति रुझान बढ़ाने में अग्रसर है। देवपुत्र परिवार को हार्दिक बधाई।

- राजा चौरसिया, कटनी (म.प्र.)

****

देवपुत्र नवम्बर प्राप्त हुआ,धन्यवाद । मुझे प्रसन्नता है कि आप की पत्रिका मुझे नियमित रूप से मिल रही है। जंगल में मोर नाचा लेख मोर पक्षी के बारे में सूक्ष्म तथा विस्तृत जानकारी लिए हुए है जो कि बच्चों हेतु लाभप्रद तथा ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा।

- कुलभूषण कालड़ा, पटियाला (पंजाब)

ओह! मामा जी!

चित्रकथा - देवांशु वत्स

सरदार सरोवर वि
मध्यप्रदेश
एक और संवेद

श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

सरदार सरोवर डूब प्र
वर्तमान में दी गई सुविध

सरदार सरोवर डूब प्रभावित परिवारों को पूर्व में दिये गये लाभ :

- डूब प्रभावित परिवारों को पूर्व में उनकी अचल संपत्ति के मुआवजों के रूप में 526 करोड़ रुपये।
- प्रभावित पात्र परिवारों को पुनर्वास अनुदान मद में 38 करोड़ 83 लाख रुपये तथा रोजगार संपत्ति क्रय करने के मद में कुल 27 करोड़ 50 लाख रुपये का भुगतान।
- प्रभावित परिवारों को पुनर्वास स्थलों पर 5400 वर्गफिट का भू-खण्ड नि:शुल्क। भू-खण्ड नहीं लेने वाले परिवार को इसके बदले 50 हजार रुपये।
- प्रभावित परिवारों को भूमि के बदले भूमि के रुपये 5 लाख 58 हजार के विशेष पैकेज के अंतर्गत् 188 करोड़ रुपये।

सरदार सरोवर डूब प्रभावितों को वर्तमान में दिये गये लाभ :

उच्चतम न्यायालय के निर्णयानुसार-

- पूर्व का विशेष पैकेज नहीं लेने वाले 681 परिवारों को प्रति परिवार रुपये 60 लाख।
- पात्रता अनुसार अन्य 943 परिवारों को प्रति परिवार रुपये 15 लाख।

मध्यप्रदेश सरकार द्वारा घोषित :

- विशेष पुनर्वास पैकेज ले चुके 15 लाख।
- पुनर्वास स्थल पर मकान आवश्यकताओं के लिये प्रति परि
- जिन परिवारों की 25 प्रतिशत पूर्व में कोई पैकेज नहीं था, अब 15 लाख।
- जिन परिवारों की 25 प्रतिशत के लिये ली गई थी, उन्हें पूर्व में रुपये 15 लाख का पैकेज।
- किसानों को पाइपलाइन क्षति क
- पुनर्वास स्थलों के सतत् विकास
- पैकेज राशि से कृषि भूमि क्रय वहन करने पर रुपये 50 करोड़।
- महात्मा गांधी स्मारक निर्माण के
- मंदिर/धार्मिक स्थलों के पुनर्नि 12 प्रतिशत ब्याज की पूर्ति के लि
- पूर्व प्रावधान में भू-खण्ड के बद मकान निर्माण नहीं करने वाले का भू-खण्ड नि:शुल्क।

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

विस्थापित परिवारों की सजग और संवेदनशील संरक्षक - मध्यप्र

स्थापितों के लिये
सरकार की
दनशील पहल

भावितों को पूर्व और
ाएं तथा आर्थिक पैकेज

श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

परिवारों को भी प्रति परिवार रुपये

निर्माण तथा अन्य तात्कालिक
वार रुपये 5 लाख 80 हजार।

से कम भूमि डूब से प्रभावित है, उन्हें
उन्हें डूब भूमि के समानुपात में रुपये

से ऊपर भूमि पुनर्वास स्थल निर्माण
कोई पैकेज नहीं था। अब इन्हें भी

मुआवजा।

कार्यों के लिये रुपये 200 करोड़।

करने पर स्टाम्प ड्यूटी शासन द्वारा

लिये रुपये 5 करोड़।

र्माण के लिये मूल मुआवजा राशि पर
ये रुपये 27 करोड़।

ले रुपये 50 हजार लेकर, कहीं भी
रिवार को भी 180/150 वर्गफिट

सरदार सरोवर परियोजना के लाभ :

अंतर्राज्यीय सरदार सरोवर परियोजना से गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान राज्य को विभिन्न लाभ मिलेंगे।

- परियोजना से बनने वाली बिजली का अधिकतम 57 प्रतिशत भाग मध्यप्रदेश को, 27 प्रतिशत भाग महाराष्ट्र को और 16 प्रतिशत भाग गुजरात को मिलता है।
- बांध की वर्तमान 121.92 मीटर ऊंचाई से बन रही बिजली के 57 प्रतिशत भाग के रूप में मध्यप्रदेश को औसतन 1750 मिलियन यूनिट बिजली प्राप्त हो रही है। गेट स्थापित होने के बाद जल भराव से 1300 मिलियन यूनिट बिजली का अतिरिक्त उत्पादन होगा। इस प्रकार इसके 57 प्रतिशत भाग के रूप में मध्यप्रदेश को प्रतिवर्ष लगभग 750 मिलियन यूनिट बिजली अतिरिक्त रूप से प्राप्त होगी।
- सरदार सरोवर का जो क्षेत्र मध्यप्रदेश में है, उसमें मछली उत्पादन बड़ी मात्रा में हो सकेगा। जलाशय/नदी से बड़ी संख्या में किसान उद्वहन कर सिंचाई का लाभ ले सकेंगे।
- परियोजना से गुजरात राज्य में लगभग 20 लाख और राजस्थान में लगभग 3 लाख हेक्टेयर सिंचाई के साथ ही सैकड़ों नगरों, ग्रामों को पेयजल तथा औद्योगिक जल उपलब्ध होगा।

जनसंपर्क : मध्यप्रदेश माध्यम/2017

प्रदेश सरकार

मध्यप्रदेश सरकार द्वारा विस्थापित परिवारों के लिये घोषित उपरोक्त पैकेज रुपये 900 करोड़

कुशल छत्तीसगढ़
सबल छत्तीसगढ़

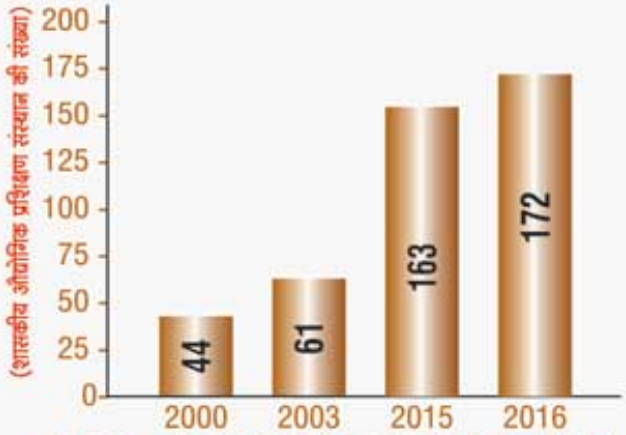

कुशल छत्तीसगढ़-सबल छत्तीसगढ़

- छत्तीसगढ़ देश का पहला राज्य, जिसने अपने युवाओं को उनके मनपंसद व्यवसायों में कौशल प्रशिक्षण पाने का दिया कानूनी अधिकार।
- विधानसभा में विधेयक लाकर 'छत्तीसगढ़ युवाओं के कौशल विकास का अधिकार अधिनियम 2013' बनाया गया। इस अधिनियम के तहत प्रदेश के युवाओं को मनपंसद व्यवसायों में तकनीकी प्रशिक्षण पाने का कानूनी अधिकार मिला।
- युवाओं को हुनरमंद बनाने के लिए राज्य में प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री कौशल विकास योजनाओं का संचालन।
- राज्य गठन के बाद 128 नये सरकारी आईटीआई खोले गए। इन्हें मिलाकर विगत तेरह साल में प्रदेश में शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आई.टी.आई.) की संख्या बढ़कर 172 हो गई।
- शासकीय आई.टी.आई. में विगत 13 साल में एक लाख युवाओं को विभिन्न व्यवसायों का प्रशिक्षण।
- 4 वर्ष में राज्य के सभी 27 जिलों में संचालित लाइवलीहुड कॉलेजों में लगभग 3,00,000 युवाओं को प्रशिक्षण दिया जा चुका है।
- अब तक प्रशिक्षित हुए युवाओं में से लगभग 74 हजार युवाओं को विभिन्न व्यवसायों में रोजगार मिला है।
- मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में छत्तीसगढ़ राज्य कौशल विकास प्राधिकरण का गठन। जिला स्तर पर कलेक्टर की अध्यक्षता में प्रत्येक जिले में जिला कौशल विकास प्राधिकरण कार्यरत।

इलेक्ट्रिकल प्रशिक्षण

वेल्डिंग प्रशिक्षण

छत्तीसगढ़ संवाद R.O. No. 62318/6

Parwati Prema Jagati
SARASWATI VIHAR

Durgapur,Nainital- 263130 (Uttarakhand)

An English Medium Senior Secondary Residential School For Boys
(A Unit Of Vidya Bharti, Affiliated To C.B.S.E.)

An English Medium Senior Secondary Fully Furnished Residential School Only For Boys
(A Unit of Vidya Bharti, Affiliated to C.B.S.E.)

A world class residential school located in the foothills of Nainital that provides moral and value based education connecting Indian culture & traditions.

Infrastructure:

Well maintained and fully furnished hostels, Mess with the modern equipments.
Hi-tech Computer Lab with Wi-Fi Campus, Every class with well equipped smart class facilities.
CCTV vigilance with adequate security systems.

Facilities:

Highly qualified, experienced, innovative and motivated faculties.
NCC, NSS and Scout Units.

Games & Sports:

Ritik Saini has proved the remarkable performance at international level in Thailand.
Grand Master **Wan Yong Lee** from Korea is associated with School. Taekwondo players are trained under his guidance and supervision.
Multipurpose hall for indoor games, such as Shooting range, Badminton, Taekwondo, Kick-Boxing, Boxing , Judo, and Table-Tennis. Football, Basketball, Climbing Wall for and Volley ball grounds/court available. International court for Basket Ball (synthetic one) is under construction.
Our students won 6 Gold, 2 Silver, 4 Bronze medals in Taekwondo Open International game held at Kolkata 2017.

Academic Excellence:

Excellent board results and substantial selection in various competitive exams.
Two students won the regional round of Cryptic Crossword Competition organized by CBSE.
Secured first position in Akhil Bhartiya Vaidik Maths Quiz competition.

Innovative Practices:

Establishment of Horticulture and Kiwi (*Actinidia deliciosa*) Orchard to develop skills and interest among students towards gardening medicinal plants.
Career counseling &self-development through various resources.

The Entrance Test for Class VI & IX for the Academic Session 2018-2019 is scheduled on18th February 2018. The Entrance Test form is available at the school office and school website www.ppjsvihar.in.

The cost of the entrance form is rupees 500/-

Ph +91-(05942) 235846/224071, 7351006369 **Fax**+91-(05942) 236853/238971
You can reach us at:- ppjsvihar@gmail.com www.ppjsvihar.in

K. P. Kala	Dr. K. P. Singh	Dr. K. V. Singh Shakya
President	Manager	Principal

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित

प्रधान सम्पादक – कृष्णकुमार अष्ठाना

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१८-२०२०

आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

A School with difference

MCL SARASWATI BAL MANDIR

SR. SEC. SCHOOL, L-BLOCK, HARI NAGAR

CBSE AFFILIATED

Website : www.sbmharinagar.in

E-mail : mclsbmhn@gmail.com

Ph. 011-28124302, 28121540

Maximum students Passed with I Division

SUBJECTWISE 90 % & ABOVE MARKS

ENGLISH [301]

1. DIVYA SHARMA	- 97 %
2. PRACHI SHUKLA	- 95 %
3. TANYA PANT	- 95 %
4. TUSHAR SHARMA	- 95 %
5. TUSHAR SINGH	- 95 %
6. VACHALI AGGARWAL	- 95 %
7. HEENA SALUJA	- 95 %
8. KASHISH SHARMA	- 95 %
9. PALLAVI CHAUHAN	- 95 %
10. ANKIT SHARMA	- 95%
11. ISHANT TANWAR	- 95 %
12. SWASTIK VERMA	- 95 %
13. VATSAL SINGHAL	- 95 %
14. TAMANNA DWIVEDI	- 95 %
15. RITIKA	- 95 %
16. MANSIMRAN KAUR	- 95 %
17. SHRUTI GUPTA	- 95 %
18. SONIA	- 94 %
19. NEH SAYAL	- 93 %
20. ANUSHA LALL	- 92 %
21. MANSI RATTA	- 92 %
22. ANAND SHARMA	- 92 %
23. CHIRANJEEV	- 92 %
24. RAMESH MEHRA	- 92 %
25. ISHA KATARIA	- 92 %
26. GAUTAM KAPOOR	- 92 %
27. PRATHAM KUMAR	- 92 %
28. SHIVAM GOEL	- 91 %
29. KHUSHI SHARMA	- 91 %
30. SIDDHARTH TERI	- 91 %
31. MUSKAN MALIK	- 91 %
32. AMAN	- 91 %
33. SHIVANI	- 91 %

ECONOMICS [030]

1. ANKIT SHARMA	- 97%
2. MANSI	- 95%
3. PRATHAM KUMAR	- 94%
4. SUSHANT UKHAL	- 91%

CHEMISTRY [043]

1. VACHALI AGGARWAL	- 99 %
2. CHIRANJEEV	- 96 %
3. RIYAJYA	- 96 %
4. ANAND SHARMA	- 94 %
5. VIVEK KR. SINGH	- 94 %
6. YUVANSH GAUR	- 94 %
7. PRACHI SHUKLA	- 93 %
8. ANJALI CHOPRA	- 90 %
9. PRABHAT SHINGRA	- 90 %

MATHEMATICS [041]

1. TANYA PANT	- 97 %
2. ASHISH KHANDELWAL	- 95 %
3. YUVANSH GAUR	- 95 %
4. VACHALI AGGARWAL	- 95 %

PHYSICAL EDUCATION [048]

1. TAMANNA DWIVEDI	- 98 %
2. VIBHA SHARMA	- 96 %
3. PRACHI PALIWAL	- 90 %
4. SHRUTI GUPTA	- 90 %

POLITICAL SCIENCE [028]

1. KARTIK GULIANI	- 96 %
2. BHARAT CHOUDHARY	- 93 %
3. SHRUTI GUPTA	- 91 %

PSYCHOLOGY [037]

1. KHUSHI SHARMA	- 98 %
2. DIVYA SHARMA	- 96 %
3. NEHA SAYAL	- 93 %
4. ISHA KATARIA	- 91 %

ENGINEERING GRAPHICS [046]

1. CHIRANJEEV	- 92 %
2. RISHABH AGGARWAL	- 92 %
3. RRITAJYA	- 91 %
4. YUVANSH GAUR	- 90%

PAINTING [049]

1. NEHA SAYAL	- 92 %

PHYSICS [042]

1. YUVANSH GAUR	- 92 %

BUSINESS STUDIES [054]

1. DEEPIKA GUPTA	- 95 %
2. HEENA SALUJA	- 95 %
3. KASHISH SHARMA	- 95 %
4. ANKIT SHARMA	- 95 %
5. TAMANNA DWIVEDI	- 94 %
6. SUSHANT UKHAL	- 94 %
7. SAGAR ARYA	- 90 %

ACCOUNTANCY [055]

1. ANKIT SHARMA	- 95 %
2. MANSI BHOGAL	- 90 %

INFORMATICS PRACTICES [065]

1. NIPUN JAIN	- 92 %

BIOLOGY [044]

1. PRIAL TANEJA	- 94 %

OUR SCHOLARS WITH 10 CGPA

101 Students Scored CGPA 7 & Above

Salient Features

"Education is not the learning of facts, but the training of the mind to think"

- Outstanding C.B.S.E Results
- All Streams : Science, Commerce and humanities are Available for classes XI and XII.
- Auditorium for cultural & interactive Sessions.
- Providing well planned co-curriculam activities as yog, dance, art & craft, music, Home Science, sports etc. for all round development of students.
- CCTV Surveillance.
- First School under Vidya Bharti trapping "Solar Energy."
- Audio Visual based teaching with Smart Classes.
- Scholarship for outstanding students.
- Regular parent-teacher interaction and orientation programs.
- Compulsary Computer Education.
- A big campus with playground, Football ground, Table Tennis, Badminton and Basketball Courts.
- I.T Dept. for keeping computerized record of students and homework via SMS and school website.

ADMISSION OPEN

FOR CLASS XI

(SCIENCE / COMMERCE / HUMANITIES

TRANSPORT FACILITY AVAILABLE

HURRY !

FEW SEATS LEFT !!

FOR VI TO IX & XI

Scholarship To Super Achievers